राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

स्वतंत्र प्रभात

@swatantraprabhatmedia @swatantramedia RNI.No. UHIN/2012/43078 (epaper.swatantraprabhat.com) @SwatantraPrabhatonline news@swatantraprabhat.com

सीतापुर से प्रकाशित एंव अयोध्या ,प्रयागराज ,मिर्जापर ,गोरखपुर , बरेली ,बुंदेलखंड , उत्तराखंड , देहरादून

सीतापुर, बुधवार, 18 फरवरी 2026

वर्ष 14,अंक 299, पृष्ट 04, मूल्यः 01 रुपया

www.swatantraprabhat.com

गाज़ियाबाद , दिल्ली , हरियाणा , चंडीगढ़ , झारखण्ड , बिहार , मध्य प्रदेश ,असम, तेलंगाना आदि जनपदो में प्रसारित

स्वतंत्र प्रभात दैनिक अख़बार तथा ऑनलाइन चैनल से सीधा जुड़ने के लिए संपर्क करें.....
9511151254

गोमतीनगर स्टेशन पर बनेगा जीआरपी थाना, अब मामला दर्ज कराने के लिए नहीं भटकेंगे यात्री..03

चित्रकूट में गौरिहार मंदिर को तोड़ने का विरोध, संत समाज ने खोला मोर्चा..04

सुप्रीम कोर्ट में पेश हुए कपिल सिब्बल, लालू यादव की तरफ से दी ऐसी दलील, जज साहब बोले- अपना काम करिए

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सुप्रीम कोर्ट में देवघर चारा घोटाला केस में आज यानी मंगलवार को सुनवाई हुई. सीबीआई लालू प्रसाद यादव की जमानत के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट पहुंची है. सुप्रीम कोर्ट में लालू प्रसाद यादव की तरफ से सीनियर एडवोकेट कपिल सिब्बल ने दलीलें रखीं. वहीं, सीबीआई की तरफ से एडिशनल सॉलिसिटर जनरल एसवी राजू ने दलीलें रखीं. लालू प्रसाद यादव की जमानत के खिलाफ CBI की अपील पर दलीलें सुनने के बाद सुप्रीम कोर्ट ने सुनवाई अप्रैल तक टाल दी. इस दौरान कपिल सिब्बल ने कोर्ट में ऐसी दलील दी, जिस पर सुप्रीम कोर्ट के जज ने कहा कि आप आपना काम कीजिए और हम अपना काम करते हैं.

दरअसल, देवघर कोषागार का मामला चारा घोटाले से संबंधित है. सुप्रीम कोर्ट में देवघर चारा घोटाला मामले में पूर्व बिहार मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव को मिली जमानत के

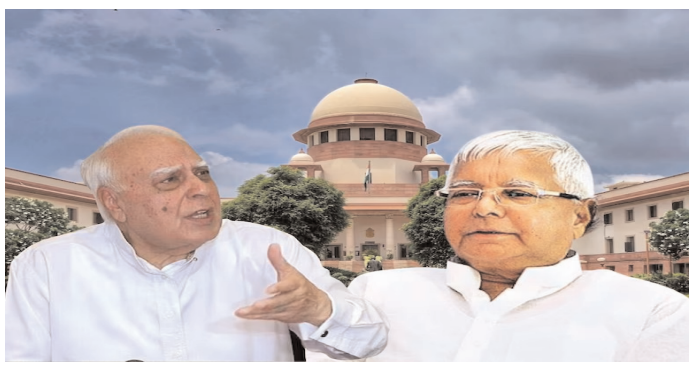

खिलाफ केंद्रीय जांच एजेंसी सीबीआई की अपील पर मंगलवार 17 फरवरी को सुनवाई हुई. सीबीआई की ओर से पेश अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल एसवी राजू ने अदालत से कहा कि सजा निलंबित करने में कानून का गलत इस्तेमाल किया गया है. उन्होंने दलील दी कि, 'यह कानून का प्रश्न है और इसे लागू किया जाना चाहिए. कानून के उल्लंघन में सजा को निलंबित किया गया है. ऐसा नहीं किया जा सकता. यह अवैध आदेश है.'

कपिल सिब्बल ने क्या दलीलें दीं?

इस पर लालू प्रसाद यादव की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता कपिल सिबल ने कहा कि मामले में एक से अधिक आरोपी हैं और कुछ आरोपियों को अभी नोटिस तक नहीं मिला है, जबकि कुछ ने CBI की अपील पर जवाब दाखिल नहीं किया है. वकील कपिल सिब्बल ने कहा कि अन्य आरोपी भी हैं. कुछ को नोटिस नहीं मिला है, कुछ ने जवाब दाखिल नहीं किया है। इतनी उत्तेजना की जरूरत नहीं है.'

कपिल सिब्बल को सुप्रीम कोर्ट की नसीहत

इस मामले में सुनवाई करने वाली पीठ ने टिप्पणी करते हुए कहा, 'हम दोनों (न्यायाधीश) जानते हैं कि यह विशेष अनुमति याचिका क्या है. हमें लगता है कि आप दोनों भी परिणाम जानते हैं. आप अपना काम कीजिए, हम अपना काम करेंगे. हम अपील के निपटारे के लिए तारीख तय कर सकते हैं. हम सभी जानते हैं कि कानून का प्रश्न क्या है. आरोपी 60, 70 और 80 वर्ष की आयु के हैं.'

सीबीआई ने क्या दलील दी?

इसके बाद सीबीआई की ओर से पेश हुए एएसजी राजू ने यह भी कहा, 'वे सभी अवैध रूप से बाहर हैं. यह जमानत सजा के बाद (पोस्ट-कन्विक्शन) की है.' अंततः अदालत ने मामले की सुनवाई अप्रैल में तय करते हुए स्थगित कर दी. इस दौरान सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि फाइलें लंबित पड़ी हैं. हम अप्रैल में तारीख देंगे. जिन मामलों में प्रतिवादी की मृत्यु हो चुकी है, उन्हें बंद कर दिया जाएगा.

बेटी गई, बेटा भी मरेगा, घर में फेंका धमकी भरा पर्चा! NEET छात्रा केस में बड़ी खबर, CBI की टीम भाई को ले गई

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

जहानाबाद नीट (NEET) छात्रा मौत मामले में जहानाबाद से बड़ी खबर सामने आई है. दरअसल नीट छात्रा की संदिग्ध मौत के मामले में उसके परिवार को लगातार मिल रही धमकियों का सिलसिला थमने का नाम नहीं ले रहा. ताजा घटना में मृत छात्रा के घर के किचन में फिर से धमकी भरा पर्चा फेंका हुआ मिला है, जिससे परिवार दहशत में है. जानकारी के मुताबिक पर्चे में साफ शब्दों में लिखा था- 'ना मानोगे? बेटी गई, बेटा भी मरेगा 2 दिन में.' इस धमकी के बाद संवेदना के माता-पिता और अन्य परिजन बेहद भयभीत हैं.

परिवार का कहना है कि यह लगातार दूसरी बार है जब घर के अंदर इस तरह का पर्चा फेंका गया है. परिजनों ने बताया कि इससे पहले भी एक धमकी भरा नोट मिला था, जिसमें पूरे परिवार को जान से मारने की बात लिखी गई थी. उस घटना के बाद पुलिस को सूचना दी गई थी और शिकायत दर्ज कराई गई थी. अब फिर से उसी तरह की हैंडराइटिंग में पर्चा मिलने से मामला और गंभीर हो गया है.

सुरक्षाकर्मियों की तैनाती के बाद भी कैसे फेंका गया पर्चा?

परिजनों के मुताबिक पर्चा घर के किचन में खिड़की के रास्ते फेंका गया था. परिवार का कहना है कि अगर यह किसी शरारती तत्व का काम है या फिर किसी संगठित साजिश का हिस्सा है, तो पुलिस को इसकी गंभीरता से जांच करनी चाहिए. बताया जा रहा है कि पुलिस ने पहले से ही घर की सुरक्षा के लिए दो सुरक्षाकर्मियों को तैनात किया हुआ है. इसके बावजूद घर के भीतर धमकी भरे पर्चे मिलना सुरक्षा व्यवस्था पर भी सवाल खड़े कर रहा है. परिवार का आरोप है कि सूचना देने के बावजूद पुलिस की कार्रवाई धीमी है और अब तक इस नए मामले में अलग से कोई प्राथमिकी दर्ज नहीं की गई है.

भाई को साथ ले गई CBI की टीम

NEET छात्रा संवेदना की मौत मामले केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (CBI) की टीम एक बार फिर जहानाबाद पहुंची. जानकारी के मुताबिक तीन दिन के भीतर यह दूसरी बार है जब सीबीआई की टीम जांच के लिए यहां आई है. इस दौरान टीम मृतक छात्रा के भाई को अपने साथ पूछताछ के लिए ले गई है. हालांकि कुछ घंटे के बाद सीबीआई की टीम भाई को लेकर वापस पहुंची और जांच करती रही. मामले में लगातार नए तथ्यों को खंगाला जा रहा है. परिजन और स्थानीय लोग जांच से जल्द सच्चाई सामने आने की उम्मीद जता रहे हैं.

एक दिन पहले ही CBI की टीम ने परिजनों से की पूछताछ

बता दें, इससे पहले नीट (NEET) की तैयारी कर रही छात्रा की संदिग्ध मौत के मामले में सीबीआई ने केस संभालने के बाद पहली बार रविवार को जहानाबाद पहुंचकर जांच की. 18 सदस्यीय टीम सुबह करीब नौ बजे छात्रा के पैतृक घर पहुंची. टीम में सीबीआई के आईजी और एसपी समेत कई अधिकारी शामिल थे. टीम ने पांच घंटे तक परिवार से पूछताछ की और मां से दो घंटे अलग बातचीत की. जानकारी के अनुसार, पिता और भाई से भी अलग-अलग कमरों में कई सवाल पूछे गए. परिवार ने बताया कि टीम ने हर पहलू पर गहराई से जानकारी ली. सीबीआई ने छात्रा के आखिरी फोन कॉल्स की डिटेल्स भी खंगाली.

संक्षिप्त ख़बरें

सोलर नल-जल योजना से बदली कुमा की तस्वीरः हर घर पहुंचा स्वच्छ पानी, घंटों की कतार से महिलाओं को मिली आजादी

रायपुर (पुष्पेंद्र सिंह): रायगढ़ जिले के धरमजयगढ़ विकासखंड की कुमा ग्राम पंचायत आज ग्रामीण बदलाव की मिसाल बन गई है। जिला मुख्यालय से करीब 100 किलोमीटर दूर बसे इस गांव में कभी पानी की किल्लत सबसे बड़ी समस्या थी, लेकिन अब जल जीवन मिशन के तहत स्थापित सोलर नल-जल योजना ने यहां की तस्वीर बदल दी है। कुछ वर्ष पहले तक महिलाएं सुबह से दोपहर तक हैंडपंपों पर कतार में खड़ी रहती थीं। गर्मी में जलस्तर गिरने से हालात और बिगड़ जाते थे। बच्चों की पढ़ाई प्रभावित होती थी और परिवार के स्वास्थ्य पर भी असर पड़ता था। गांव की दिनचर्या पानी की उपलब्धता पर निर्भर थी। सौर ऊर्जा आधारित नल-जल प्रदाय प्रणाली स्थापित होने के बाद गांव में बड़ा बदलाव आया। सोलर पैनलों से संचालित पंप के जरिए पानी को ऊंची टंकी तक पहुंचाया जाता है और पाइपलाइन से हर घर तक नियमित आपूर्ति की जाती है। बिजली कटौती का इस व्यवस्था पर कोई असर नहीं पड़ता। पर्यावरण के अनुकूल यह प्रणाली कम रखरखाव में दीर्घकालिक समाधान दे रही है।

गांव की देवमती बताती हैं कि पहले रोज दो-तीन घंटे पानी लाने में लग जाते थे। अब घर में ही नल से स्वच्छ पानी मिल रहा है। वे बच्चों की पढ़ाई पर ध्यान दे पा रही हैं, स्वसहायता समूह की गतिविधियों में सक्रिय हैं और सामाजिक कार्यक्रमों में भी भागीदारी बढ़ी है। स्वच्छ जल मिलने से परिवार का स्वास्थ्य सुधरा है और जलजनित बीमारियों में कमी आई है। महिलाओं को समय की स्वतंत्रता मिली है, जिससे वे आयवर्धक कार्यों और सामाजिक निर्णयों में भागीदारी कर रही हैं। विद्यालयों और आंगनबाड़ी केंद्रों में भी स्वच्छ पेयजल उपलब्ध होने से बच्चों की उपस्थिति और स्वच्छता में सुधार देखा गया है। ग्राम स्तर पर जल प्रबंधन समिति का गठन किया गया है, जो पूरी व्यवस्था की निगरानी कर रही है। सामुदायिक सहभागिता से यह योजना सफलतापूर्वक संचालित हो रही है। आज कुमा गांव केवल जल उपलब्धता का उदाहरण नहीं, बल्कि आत्मनिर्भरता, सम्मान और ग्रामीण विकास की नई धारा का प्रतीक बन गया है।

सोनम वांगचुक के भाषण के सरकारी ट्रांसक्रिप्ट पर सुप्रीम कोर्ट ने उठाए सवाल, रिहाई की मांग तेज

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

नई दिल्ली: सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार (16 फ़रवरी) को जलवायु कार्यकर्ता सोनम वांगचुक के खिलाफ केंद्र सरकार द्वारा पेश किए गए वीडियो ट्रांसक्रिप्ट की प्रामाणिकता पर सवाल उठाते हुए कहा कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) के दौर में सटीकता बेहद अहम है. वांगचुक की पत्नी गीतांजलि अंगमो की ओर से पेश वरिष्ठ अधिवक्ता कपिल सिब्बल ने दलील दी कि लद्दाखी कार्यकर्ता वांगचुक से जुड़ी कुछ टिप्पणियां ऐसी हैं, जो उन्होंने कभी कही ही नहीं. इसके बाद अदालत ने केंद्र सरकार को निर्देश दिया कि वह वांगचुक के भाषणों के वास्तविक ट्रांसक्रिप्ट पेश करे.

मामले की सुनवाई जस्टिस अरविंद कुमार और पी.बी. वराले की पीठ ने कहा, 'मिस्टर सॉलिसिटर, हमें भाषण का वास्तविक ट्रांसक्रिप्ट चाहिए. जिस पर उन्होंने भरोसा किया है और जो आप कह रहे हैं, वह अलग-अलग है. हम तय करेंगे. यह जरूरी है कि उन्होंने वास्तव में क्या कहा, उसका वास्तविक ट्रांसक्रिप्ट मौजूद हो. कम से कम, उन्होंने जो कहा है, उसका सही अनुवाद तो होना ही चाहिए. आपका अनुवाद सात से आठ मिनट का है, जबकि भाषण तीन मिनट का है. हम आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के युग में हैं; अनुवाद में कम से कम 98 प्रतिशत सटीकता होनी चाहिए.'

टाइम्स ऑफ इंडिया की रिपोर्ट के मुताबिक, सिब्बल ने तर्क दिया कि केंद्र सरकार ने वांगचुक की हिरासत के आदेश उन पंक्तियों के आधार पर दिए, जो उन्होंने कभी कही ही नहीं. सिब्बल ने कहा, 'वांगचुक ने अपना आंदोलन जारी रखा और नेपाल का संदर्भ देकर युवाओं को उकसाया. यह पंक्ति कहां से आई? यह एक बेहद अनोखा हिरासत आदेश है, आप किसी ऐसी बात पर भरोसा करते हैं, जो अस्तित्व में ही नहीं है, और फिर कहते हैं कि यह 'व्यक्तिपरक संतोष' (subjective satisfaction) पर आधारित है.'इस पर अतिरिक्त

सॉलिसिटर जनरल के.एम. नटराज ने जवाब दिया कि ट्रांसक्रिप्ट तैयार करने की जिम्मेदारी एक अलग विभाग की है. उन्होंने कहा, 'हम इसके विशेषज्ञ नहीं हैं.'

अब इस मामले की अगली सुनवाई गुरुवार को होगी.

किसान संगठन ने वांगचुक की रिहाई की मांग की महाराष्ट्र के मिराज स्थित किसान संगठन शेतकरी संघटना ने एक प्रस्ताव पारित कर जलवायु कार्यकर्ता की रिहाई की मांग की और उनकी कथित मनमानी व अवैध हिरासत की निंदा की है. द हिंदू की रिपोर्ट के अनुसार, संगठन उनकी रिहाई की मांग को लेकर कई गांवों में होर्डिंग्स भी लगाएगा.

शेतकरी संघटना के कार्यकारी अध्यक्ष कालीदास आपेट ने अख़बार से कहा, 'सरकार कृतघ्न और गलत है. भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने अपने 2019 के घोषणापत्र में खुद लद्दाख को अलग राज्य का दर्जा देने का वादा किया था, सोनम वांगचुक केवल वही मांग कर रहे थे, जो पहले से वादा की जा चुकी थी. हम भाजपा से अपील करते हैं कि सरकार उन्हें तुरंत रिहा करे. साथ ही, हम सभी सामाजिक संगठनों से भी अपील करते हैं कि वे एकजुट होकर सोनम वांगचुक की रिहाई की मांग करें.'

आपेट ने लद्दाख में शिक्षा को आगे बढ़ाने और वैज्ञानिक नवाचार में वांगचुक के योगदान का भी उल्लेख किया. उन्होंने कहा, 'वांगचुक वह व्यक्ति हैं जिन्होंने हमारे जवानों के लिए सौर ऊर्जा से चलने वाले टेंट बनाए. वह खुद एक सैनिक के बेटे हैं. उन्होंने भारतीय सेना के जवानों का इतना ख्याल रखा है. ऐसे व्यक्ति को देशद्रोही कहना न सिर्फ कृतघ्नता है, बल्कि उकसावे वाला भी है. उनकी एकमात्र मांग यही है कि सरकार अपना वादा निभाए.'

क्या है मामला?

वांगचुक को 26 सितंबर 2025 को राष्ट्रीय सुरक्षा कानून (एनएसए) के तहत हिरासत में लिया गया था. यह कार्रवाई लद्दाख को राज्य के दर्जे और संवैधानिक सुरक्षा की मांग को लेकर लेह, लद्दाख में हुए प्रदर्शनों के हिंसक हो जाने के बाद की गई थी. प्रदर्शनकारियों और सुरक्षा बलों के बीच झड़पों में चार लोगों की मौत हो गई थी और दर्जनों घायल हुए थे.

वांगचुक शिक्षा और जलवायु परिवर्तन से जुड़े अपने नवाचारों के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जाने जाते हैं. उनकी हिरासत ने दुनिया भर के मानवाधिकार संगठनों का ध्यान खींचा था, जिन्होंने उनकी गिरफ्तारी की परिस्थितियों की समीक्षा की मांग की है. 11 फरवरी को हुई पिछली सुनवाई में केंद्र सरकार ने अदालत को बताया था कि वांगचुक की सेहत स्थिर है. यह जानकारी गीतांजलि अंगमो द्वारा अपने पति की रिहाई की मांग को लेकर दायर याचिका के जवाब में दी गई थी.

सरकार की ओर से यह भी कहा गया था कि वांगचुक की सेहत ऐसी नहीं है, जिसके आधार पर उन्हें विशेष राहत दी जाए, और उनकी हिरासत के कारण अब भी वैध हैं. सरकार ने अदालत से स्वास्थ्य आधार पर उनकी शीघ्र रिहाई पर विचार न करने का आग्रह किया था.

दिल्ली यूनिवर्सिटी में एक महीने तक प्रदर्शन, नारेबाजी और सभाओं पर रोक

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

नई दिल्ली: दिल्ली यूनिवर्सिटी (डीयू) ने मंगलवार (17 फरवरी) को एक आदेश जारी कर परिसर में सार्वजनिक बैठकों, जुलूसों, प्रदर्शनों और किसी भी प्रकार के विरोध-प्रदर्शन पर एक महीने के लिए प्रतिबंध लगा दिया. विश्वविद्यालय ने इसके पीछे यातायात में बाधा, सुरक्षा के लिए खतरा और सार्वजनिक शांति भंग होने की आशंका को कारण बताया है.

यह आदेश हालिया विवादों के बाद आया है. पिछले सप्ताह दिल्ली पुलिस ने यूजीसी के 'जाति-विरोधी' नियमों के विरोध में दो छात्र समूहों के बीच हुई झड़प के बाद दो एफआईआर दर्ज की थीं. इन नियमों पर फिलहाल सुप्रीम कोर्ट ने रोक लगा रखी है, क्योंकि सामान्य (या ऊंची जाति) वर्ग के छात्रों ने इन्हें पक्षपातपूर्ण बताया है, जबकि कई जाति-विरोधी समूह इन्हें लागू करने की मांग कर रहे हैं. एक अन्य घटना में, 12 फरवरी को सामाजिक न्याय पर आयोजित एक कार्यक्रम के दौरान इतिहासकार प्रो. एस. इरफ़ान हबीब पर भाषण देते समय पानी से भरी बाल्टी फेंकी गई थी.

17 फरवरी को जारी आदेश में डीयू के प्रॉक्टर कार्यालय ने कहा कि 'अप्रतिबंधित सार्वजनिक जमावड़े' के कानून-व्यवस्था पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने की आशंका संबंधी सूचनाओं के आधार पर यह प्रतिबंध लगाया गया है.

आदेश में सिविल लाइंस क्षेत्र के सहायक पुलिस आयुक्त के पूर्व निर्देश का भी उल्लेख किया गया है, जिसमें सार्वजनिक बैठकों, मशालों या इसी प्रकार की वस्तुएं लेकर चलने, नारेबाजी तथा ऐसे भाषणों पर रोक लगाने को कहा गया था, जो सार्वजनिक शांति या यातायात को प्रभावित कर सकते हैं.

डीयू के प्रॉक्टर मनोज कुमार ने आदेश में कहा कि 'पूर्व में आयोजक ऐसे प्रदर्शनों को नियंत्रित करने में अक्सर विफल रहे, जिससे वे उग्र होकर व्यापक रूप से फैल गए और विश्वविद्यालय परिसर के भीतर कानून-व्यवस्था की स्थिति बिगड़ी.'

आदेश के अनुसार, पांच या उससे अधिक व्यक्तियों के एकत्र होने, नारे लगाने, भाषण देने तथा 'मशाल, टॉर्च आदि सहित किसी भी प्रकार की खतरनाक सामग्री ले जाने' पर प्रतिबंध रहेगा.

आदेश में कहा गया है कि यह प्रतिबंध तत्काल प्रभाव से लागू होगा और एक महीने तक प्रभावी रहेगा, जब तक कि इसे वापस न ले लिया जाए. समाचार एजेंसी पीटीआई की रिपोर्ट के अनुसार, हंसराज कॉलेज के अंग्रेज़ी विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर और डीयू की कार्यकारी परिषद के सदस्य मितुराज धूसिया ने इस कदम को 'पूरी तरह से दमनात्मक कार्रवाई' बताया.

धूसिया ने यह स्वीकार करते हुए कि प्रदर्शन शांतिपूर्ण होने चाहिए और विश्वविद्यालय को व्यवस्था बनाए रखनी चाहिए, कहा कि यातायात में बाधा का हवाला देकर सभाओं पर रोक लगाना स्वीकार्य नहीं है. उन्होंने सवाल उठाया, 'क्या प्रशासन नियुक्तियों, राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) के क्रियान्वयन, यूजीसी इक्विटी बिल और शिक्षकों के हालिया निलंबनों जैसे मुद्दों पर होने वाली लामबंदी को रोकने की कोशिश कर रहा है?'

धूसिया ने आदेश को वापस लेने की मांग की और कहा कि प्रॉक्टर कार्यालय एकतरफा तरीके से सार्वजनिक बैठकों पर व्यापक प्रतिबंध नहीं लगा सकता.

जम्मू की जेल से फरार पाकिस्तानी कैदी अंबाला से गिरफ्तार, पुलिसकर्मियों को घायल कर भागे थे आरोपी

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

जम्मू-कश्मीर डेस्क: STF अंबाला और STF हरियाणा को बड़ी सफलता मिली है। जम्मू-कश्मीर के आर.एस. पुरा क्षेत्र स्थित जुवेनाइल होम से फायरिंग कर फरार हुए दो आतंकियों को STF हरियाणा ने अंबाला रेलवे स्टेशन परिसर से गिरफ्तार कर लिया है। जानकारी साझा करते हुए SP STF विक्रांत भूषण ने बताया कि आर.एस. पुरा जुवेनाइल होम से कुल तीन आतंकी फरार हुए थे। इनमें दो पाकिस्तानी नागरिक और एक भारतीय नागरिक शामिल था। स्क्वॉड अंबाला ने दोनों पाकिस्तानी आतंकियों को स्टेशन परिसर से दबोचकर जम्मू-कश्मीर पुलिस के हवाले कर दिया।

गिरफ्तार आतंकियों की पहचान मोहम्मद सनाउल्लाह (20 वर्ष) और अहसान अनवर (21 वर्ष) के रूप में हुई है। दोनों पाकिस्तान के रहने वाले हैं। इनमें से एक 2019 से और दूसरा 2021 से जुवेनाइल होम में बंद था। तीसरा फरार आरोपी भारतीय नागरिक करमजीत उर्फ गुग्गा है, जिसे इस पूरी साजिश का मास्टरमाइंड बताया जा रहा है। प्रारंभिक जांच में सामने आया है कि उसी ने जेल से फरारी की योजना बनाई थी और दोनों आतंकियों को उत्तर प्रदेश के रास्ते नेपाल सीमा के जरिए देश से बाहर भेजने की तैयारी कर रहा था। जम्मू-कश्मीर पुलिस आरोपियों को रिमांड पर लेकर आगे की जांच करेगी। सुरक्षा एजेंसियां करमजीत उर्फ गुग्गा की तलाश में दबिश दे रही हैं।

परिवर्तन की दहलीज पर बांग्लादेश

दक्षिण एशिया की राजनीति में समय.समय पर ऐसे मोड़ आते रहे हैं जो केवल किसी एक देश के सत्ता परिवर्तन तक सीमित नहीं रहते बल्कि पूरे क्षेत्र की कूटनीतिक दिशा और सामाजिक मनोविज्ञान को प्रभावित करते हैं। बांग्लादेश में हाल ही में हुए संसदीय चुनावों और उसके बाद तारिक रहमान के प्रधानमंत्री पद की शपथ लेने की तैयारी को भी इसी परिप्रेक्ष्य में देखा जाना चाहिए। यह घटना केवल एक राजनीतिक दल की जीत या एक नेता के उदय का प्रसंग नहीं है बल्कि एक ऐसे दौर का संकेत है जिसमें जनता की आकांक्षाएँ लोकतांत्रिक संस्थाओं की विश्वसनीयता और पड़ोसी देशों के साथ संबंधों की नई व्याख्या सामने आ सकती है। वर्षों तक राजनीतिक ध्रुवीकरण और सत्ता संघर्ष से गुजरने के बाद यह परिवर्तन उस समाज की बेचैनी और उम्मीदों दोनों को प्रतिबिंबित करता है।

तारिक रहमान का राजनीतिक सफ़र स्वयं बांग्लादेश के हालिया इतिहास का एक प्रतीकात्मक प्रतिबिंब रहा है। एक ऐसे परिवार में जन्म लेने के कारण जहाँ राजनीति जीवन का स्वाभाविक हिस्सा थीए उन्होंने सत्ता के निकट रहकर अवसर भी देखे और विवादों का सामना भी किया। भ्रष्टाचार के आरोपों के चलते देश छोड़ना और लंबे समय तक विदेश में रहना उनके जीवन का वह अध्याय रहा जिसने उन्हें आलोचना और सहानुभूति दोनों दिलाई। निर्वासन के वर्षों में उन्होंने पार्टी के भीतर रणनीतिक भूमिका निभाईए जिससे यह धारणा बनी कि वे भले ही भौगोलिक रूप से दूर होंए लेकिन राजनीतिक रूप से सक्रिय हैं। जब परिस्थितियाँ बदलीं और वे वापस लौटेए तो उनकी वापसी केवल व्यक्तिगत पुनर्स्थापना नहीं थीए बल्कि उनके समर्थकों के लिए एक प्रतीकात्मक पुनरागमन था कृ एक ऐसा क्षण जिसमें वे स्वयं को एक वैकल्पिक नेतृत्व के रूप में प्रस्तुत कर सके।

2024 के जनआंदोलन ने बांग्लादेश की राजनीति में जो उथल.पुथल पैदा कीए उसने सत्ता संरचना को बदलकर रख दिया। लंबे समय तक प्रभावशाली रही अवामी लीग को सत्ता से हटना पड़ा और इससे राजनीतिक रिक्तता उत्पन्न हुई। इस रिक्तता को भरने के लिए जो चुनाव हुएए उनमें मतदाताओं की भागीदारी और परिणामों ने स्पष्ट संकेत दिया कि जनता परिवर्तन की आकांक्षा रखती है। यह परिवर्तन कितना स्थायी या प्रभावी होगाए यह भविष्य के शासन पर निर्भर करेगाए लेकिन तत्कालीन परिणामों ने यह स्पष्ट कर दिया कि लोकतांत्रिक प्रक्रिया अभी भी जनता के लिए अभिव्यक्ति का महत्वपूर्ण माध्यम है। चुनावों में विपक्ष की अनुपस्थिति या सीमित भागीदारी पर सवाल भी उठेए परंतु इसके बावजूद यह घटना राजनीतिक शक्ति संतुलन में निर्णायक बदलाव के रूप में दर्ज हुई।

तारिक रहमान की जीत के साथ उनके सामने जो जिम्मेदारियाँ आई हैंए वे केवल प्रशासनिक नहीं बल्कि नैतिक और संस्थागत भी हैं। एक ऐसे देश में जहाँ राजनीतिक प्रतिस्पर्धा अक्सर वैचारिक से अधिक व्यक्तिगत संघर्ष में बदल जाती रही हैए वहाँ लोकतांत्रिक विश्वास बहाल करना सबसे बड़ी चुनौती है। कानून.व्यवस्था की मजबूतीए न्यायिक प्रक्रिया की निष्पक्षता और आर्थिक स्थिरता को सुनिश्चित करना केवल नीतिगत निर्णयों से नहीं बल्कि शासन की विश्वसनीयता से भी जुड़ा होता है। जनता के लिए परिवर्तन का अर्थ केवल नेतृत्व बदलना नहीं बल्कि जीवन की परिस्थितियों में ठोस सुधार देखना है। यदि नई सरकार इन अपेक्षाओं पर खरी उतरती है तो यह सत्ता परिवर्तन इतिहास में सकारात्मक मोड़ के रूप में दर्ज होगाय अन्यथा यह भी अस्थायी राजनीतिक उतार.चढ़ाव की श्रेणी में शामिल हो सकता है। इस पूरे घटनाक्रम का एक महत्वपूर्ण आयाम भारत.बांग्लादेश संबंधों से भी जुड़ा है। दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक निकटताए ऐतिहासिक अनुभव और आर्थिक साझेदारी लंबे समय से संबंधों को आकार देते रहे हैं। सत्ता परिवर्तन के साथ यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि नई सरकार इन संबंधों को किस दिशा में ले जाएगी। भारत द्वारा प्रतिनिधि भेजकर शपथ समारोह में भागीदारी जताना कूटनीतिक निरंतरता का संकेत है वहीं नई सरकार द्वारा संबंधों को पुनर्परिभाषित करने की इच्छा एक नए संवाद की संभावना खोलती है। सीमा प्रबंधनए जल बंटवाराए व्यापार और सुरक्षा सहयोग जैसे मुद्दे केवल द्विपक्षीय समझौतों का विषय नहीं बल्कि लाखों लोगों के जीवन से जुड़े प्रश्न हैं। इसलिए इन पर होने वाला संवाद आने वाले वर्षों में क्षेत्रीय स्थिरता को प्रभावित कर सकता है।

शेख हसीना के सत्ता से हटने के बाद उत्पन्न राजनीतिक विमर्श भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। किसी भी लोकतंत्र में सत्ता परिवर्तन के साथ आरोप.प्रत्यारोप और वैचारिक संघर्ष सामने आते हैंए परंतु दीर्घकालीन स्थिरता इस बात पर निर्भर करती है कि राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता संस्थागत मर्यादा के भीतर रहे। यदि नई सरकार अपने विरोधियों को केवल राजनीतिक प्रतिस्पर्धी मानने के बजाय लोकतांत्रिक प्रक्रिया का हिस्सा समझेए तो इससे राजनीतिक वातावरण में संतुलन आ सकता है। वहीं यदि प्रतिशोध की भावना हावी होती है तो इससे सामाजिक विभाजन गहरा सकता है। यह संतुलन साधना किसी भी नए नेतृत्व के लिए सबसे कठिन परीक्षा होती है।

तारिक रहमान का शपथ ग्रहण इस मायने में प्रतीकात्मक भी है कि यह परंपराओं से अलग आयोजन के रूप में सामने आया है। स्थान और स्वरूप में परिवर्तन को केवल औपचारिक बदलाव के रूप में नहीं बल्कि राजनीतिक संकेत के रूप में भी देखा जा सकता है। ऐसे प्रतीक अक्सर जनता के मन में नए अध्याय की अनुभूति पैदा करते हैं। हालाँकि वास्तविक परिवर्तन प्रतीकों से आगे बढ़कर नीतियों और क्रियान्वयन में दिखाई देता है। इसलिए यह क्षण जितना आशा का हैए उतना ही सावधानी से मूल्यांकन का भी है।

दक्षिण एशिया का इतिहास बताता है कि राजनीतिक परिवर्तन अक्सर भावनात्मक ऊर्जा से भरे होते हैंए परंतु उनकी सफलता प्रशासनिक दक्षता और सामाजिक समावेशन पर निर्भर करती है। बांग्लादेश ने आर्थिक विकासए शिक्षा और सामाजिक सूचकांकों में पिछले दशकों में उल्लेखनीय प्रगति की हैए जिसे बनाए रखना और आगे बढ़ाना किसी भी सरकार के लिए चुनौतीपूर्ण होगा। साथ ही वैश्विक आर्थिक दबावए जलवायु परिवर्तन और क्षेत्रीय सुरक्षा जैसे मुद्दे ऐसे हैं जिनसे निपटने के लिए संतुलित कूटनीति और दूरदर्शी नीतियों की आवश्यकता होगी।

अंततः यह कहा जा सकता है कि तारिक रहमान का सत्ता में आगमन केवल एक राजनीतिक घटना नहीं बल्कि एक संभावनाओं से भरा क्षण है। इसमें उम्मीद भी है और अनिश्चितता भीए समर्थन भी है और आलोचना भी। लोकतंत्र की खूबसूरती इसी में है कि यह किसी भी परिवर्तन को अंतिम सत्य नहीं मानताए बल्कि उसे निरंतर संवाद और मूल्यांकन की प्रक्रिया का हिस्सा बनाता है। आने वाले समय में यह स्पष्ट होगा कि यह नया अध्याय किस दिशा में आगे बढ़ता है परंतु फिलहाल यह घटना उस क्षेत्रीय राजनीति की धड़कन को सुनने का अवसर देती है जहाँ जनताए नेतृत्व और पड़ोसी देश मिलकर इतिहास की अगली पंक्तियाँ लिखते हैं।

महेन्द्र तिवारी

संपादकीय

आओ कि इक ख्वाब बुनें

चलिए, एक ख्वाब देखें। क्या ख्वाब में भी यह संभावना हो सकती है कि भारत, पाकिस्तान और बांग्लादेश के मध्य आने वाले समय में कोई परिसंघ (कान्फैडरेशन) या महासंघ बनेगा? फिलहाल आज के हालात इसकी गवाही नहीं देते कि आने वाले वक्त में ऐसा कोई परिसंघ या महासंघ इन तीन देशों के बीच बनेगा? साझी विरासत और साझेदारी के अनेक पुल थे जो हमारी अपनी ही सरकारों और अपने ही लोगों ने तोड़ डाले। मगर उन साझे पुलों के खण्डहर एवं निशानियां तो आज भी मौजूद हैं।

चलिए, साझे पुलों पर एक नजर तो डाल लें। लाहौर के किले का 'लव-मंदिर' गवाही देता है कि यह शहर भगवान राम के बड़े पुत्र लव ने बसाया था। पाकिस्तान की सरकार वहां के इतिहासकार व पुरातत्वविद भी यह मानते हैं कि लाहौर महाराजा लव ने बसाया था और कसूर की स्थापना लव के छोटे भाई कुश ने की थी। सिख धर्म की पहली पातशाही श्री गुरु नानक देव ने वर्तमान पाकिस्तान स्थित श्री ननकाना साहब में जन्म लिया था और वह जिस स्थान पर ज्योति-ज्योत समाए थे, वह स्थान भी श्री करतारपुर साहब वर्तमान पाकिस्तान में ही है। हमारे शहीदे आज़म भगत सिंह का जन्म स्थान भी वर्तमान पाक में है और उन्होंने अपने दोनों हमजोलियों सुखदेव व राजगुरु के साथ लाहौर की सेंट्रल जेल में ही फांसी के फंदे पर अंतिम सांस ली थी। यह सिलसिला बहुत लम्बा है। कदम-कदम पर इतिहास के पन्ने साझी विरासत की गवाही देते हैं। कहीं कटासराज के बहाने तो कहीं मुल्तान के आदित्य मंदिर (मुल्तान) के बहाने, कहीं किस्सों, कहानियों, लोकगीतों, साहित्यकारों के बीच साझेदारी खत्म नहीं हो पाई। पिछली सदी में ही सर गंगाराम, सरदार दयाल सिंह मजीठिया, लाला लाजपत राय और उनका गुलाब देवी अस्पताल आदि महान शख्सियतों के नाम साझेदारी में बकायदा बने हुए हैं। जब भी मंटो, फैज़, अमृता, साहिर, बड़े गुलाम अली खान, रेशमा व मेहंदी हसन की बात चलती है तो भी साझी विरासत करवटें लेती हैं। इन दिनों राखीगढ़ी की चर्चा के साथ-साथ हड़प्पा व मोहेन्जोदाड़ो की पुरातात्विक सांझेदारी, पुराना तक्षशिला, व्याकरण के धुरंधर विद्वान पाणिनी, सबका जिक्र सांझे पुलों के रूप में हो रहा है। मगर यह भी एक हकीकत है कि इतिहास में 'रिवर्स-गियर' नहीं होते। वैसे यह भी हकीकत ही है कि जहां पुराने रूप में लौटना नामुमकिन हो वहां कुछ साझे पुल या नए सब-स्टेशन बनाए जा सकते हैं। इसी अवधारणा को विशेष रूप में समर्थन देने वालों में भाजपा के शिखर पुरुष लालकृष्ण अडवाणी और पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी भी शामिल थे लेकिन पाकिस्तान में सैनिक-जुंडली व आईएसआई सरीखी संस्थाओं ने ऐसे सभी प्रयासों को 'पंक्चर' किया। 'सदा-ए-सरहद' और 'समझौता एक्सप्रेस' सरीखे ईमानदाराना प्रयास भी असफल रहे। अतीत में इससे पूर्व भी सांसद एचवी कामथ, डॉ. राममनोहर लोहिया व आचार्य कृपलानी ने भी प्रयास किए थे। इसी सिलसिले में क्रिकेट, हॉकी व 'लिटरेचल फैस्टिवल्स' की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही। उधर 'ढाके की मलमल' वाला बांग्लादेश एक अलग राष्ट्र बन गया। आप अनुमान लगाएं एक वक्त का दौर, काज़ी नज़रूल इस्लाम (वर्तमान बांग्लादेश) रवींद्रनाथ टैगोर, बंकिम चंद्र, फैज़, मंटो, कुर्रदल एन हैदर, अमृता प्रीतम, साहिर, इस्मत चुगतई आदि इसी एक 1947 पूर्व वाले एक ही देश का हिस्सा थे। 1947 में मजहब के आधार पर देश के दो टुकड़े हुए और फिर 1971 में पाकिस्तान भी दो हिस्सों में बंट गया, मगर यह दूसरा विभाजन 'मज़हब' के आधार पर नहीं हुआ। यह भाषा के आधार पर हुआ। बांग्लादेश के नाम से अस्तित्व में आए इस तीसरे राष्ट्र का गठन बंगला भाषाई व पंजाबी भाषाई क्षेत्र के टकराव के रूप में आया है। 'टुकड़े-टुकड़े' होने का यह सिलसिला अभी भी वर्तमान पाकिस्तान में भी जारी है। वहां एक ओर बलूचिस्तान की सुगबुगाहट जारी है तो दूसरी ओर पख्तून भी अलग होने के लिए बेचैन है।

उधर आतंकी संगठनों ने लाहौर, बहावलपुर व पाक-अधिकृत कश्मीर में अपनी-अपनी समानांतर सरकारें चला रखी हैं।

तीनों राष्ट्रों में भारत विकास, नवनिर्माण एवं अर्थव्यवस्था की दृष्टि से मजबूत है मगर भाषा, सम्प्रदाय व मजहब के आधार पर एकरूपता अभी भी एकाध दशक की मोहताज है। यह तो तय है कि इस देश के और टुकड़े अब नामुमकिन हैं। देश तो एक ही रहेगा मगर खींचतान कुछ अवधि तक चल सकती है। वर्तमान ढांचे में यह तो स्पष्ट हो ही गया है कि फिलहाल इसका कोई विकल्प नहीं है। जो विकल्प हैं वो भी 'भोथरे' हो चुके हैं। इस पूरे उपमहाद्वीप में देर-सवेर एक 'कान्फैडरेशन' या 'महासंघ' की आवश्यकता शिद्दत से महसूस होने लगेगी। इस दिशा में जाने का थोड़ी पहलकदमी का रास्ता साहित्य, पुरातत्व, क्रिकेट व हॉकी से ही निकलेगा। तब बिस्मिल्लाह खान की शहनाई, बड़े गुलाम अली खान, पंडित ओंकारनाथ ठाकुर व किशोरीबाई अमोनकर का आलाप ही काम आएगा। लता ताई, नूरजहां, मुहम्मद रफी, किशोर दा, आशा भोंसले, आबिदा, रेशमां इस उपमहाद्वीप की साझी संस्कृति की खुशबू को कब तक दबाकर रखेंगे। लव-कुश के बिना रामकथा अधूरी है। चलिए पंडित रवि शंकर व एआर रहमान (अब शायद पछता रहे होंगे) का साझा सुर-संगम भी इस माटी की सोंधी गंध में रचा बसा है।

वन्दे मातरम् पर भी विवाद

भारत सरकार के गृह मन्त्रालय द्वारा सभी अधिकारी समारोहों में राष्ट्रगीत 'वन्दे मातरम्' के सभी छह छन्द गाये जाने को अनिवार्य जाने के बाद पूरे देश में यह अनावश्यक बहस छिड़ गई है कि ऐसा करना क्यों जरूरी समझा गया। सबसे पहले हमें यह जान लेना चाहिए कि वन्दे मातरम् वह गीत है जो भारत के प्रथम स्वतन्त्रता आन्दोलन के दौरान सभी विचारों व सिद्धान्तों के लोगों द्वारा गाया जाता रहा तथा अंग्रजों के विरुद्ध विद्रोह का प्रतीक बन गया। यह गीत भारत भूमि की वन्दना इस प्रकार करता है कि इसमें रहने वाले सभी धर्मों व समुदायों के लोग इसे अपनी पुण्य भूमि मानते हैं। 1937 से पहले इस गीत के सभी छह छन्दों का पाठ सार्वजनिक रूप से आजादी के दीवानों द्वारा किया जाता था और सबसे ज्यादा क्रान्तिकारी मार्ग से भारत को स्वतन्त्रता दिलाने की कसम उठाने वाले युवा ही इसका गायन करते थे और फांसी को फंदे को हंसते-हंसते चूम लेते थे। मगर भारत की आजादी का इतिहास भी कई आयामों वाला है जिसमें सबसे ज्यादा विवादास्पद पाकिस्तान का गठन होना है। यह सर्वविदित है कि 1920 तक मोहम्मद अली जिन्ना कांग्रेस पार्टी में भी सक्रिय रहा था और इसका सदस्य भी था, मगर वह मुस्लिम लीग का भी सदस्य था क्योंकि 1906 में भारत में गठित मुस्लिम लीग के सदस्य मुस्लिम नागरिकों को दोहरी सदस्यता रखने की इजाजत कांग्रेस पार्टी ने दे रखी थी। अंग्रेजों ने संयुक्त भारत के हिन्दू- मुसलमानों को आपस में बांट देने की गरज से ही 1909 में प्रथक निर्वाचन मंडल देने का फैसला कर लिया था। इसके साथ-साथ ही 1885 में गठित कांग्रेस पार्टी अंग्रेजों से शासन में भारतीयों की भागीदारी बढ़ाये जाने की मांग लगातार कर रही थी जिसे बाद में सेल्फ रूल या स्वराज तक किया गया और 1930 में जाकर पूर्ण स्वराज्य की मांग की गई। मगर इस बीच मोहम्मद अली जिन्ना ने महात्मा गांधी के भारत आने के बाद उनसे मतभेद हो जाने के कारण कांग्रेस पार्टी की सदस्यता छोड़ दी और वह मुस्लिम लीग का ही सदस्य बना रहा परन्तु 1930 के बाद से इंग्लैंड से दोबारा वापस आने के बाद से उसकी राजनीति बदलती गई और वह मुसलमानों के लिए धर्म के आधार पर अलग राष्ट्र बनाने का हिमायती हो गया। जिन्ना की राजनीति में भारत के विभिन्न प्रान्तों में 1936 में हुए प्रथम प्रान्तीय चुनावों के बाद आमूलचूल परिवर्तन आया और उसने खुलेआम ऐलानिया साम्प्रदायिक राजनीति करने की नीयत बना ली और तत्कालीन अंग्रेज वायसराय को भी इस बारे में बता दिया। उसने खुलेआम यह कहना शुरू कर दिया कि भारत में हिन्दू और मुसलमान एक साथ मिल कर नहीं रह सकते हैं क्योंकि इन दोनों सम्प्रदायों की संस्कृति अलग-अलग है। हिन्दुओं के लिए जो ऐतिहासिक व्यक्तित्व नायक हैं वे मुसलमानों के लिए खलनायक हैं और भाषा से लेकर वेशभूषा तक दोनों समुदायों के रहन-सहन व खान-पान में आधारभूत अन्तर है। इसकी असल वजह यह थी कि 1936 के प्रन्तीय चुनावों में मुस्लिम लीग की जबर्दस्त हार हुई थी और मुस्लिम बहुल प्रान्तों तक में उसके सदस्य अच्छी संख्या में जीत नहीं पाये थे। जबकि दूसरी तरफ कांग्रेस पार्टी को शानदार जीत मिली थी और मुस्लिम निर्वाचक सीटों तक पर उसके प्रत्याशी अच्छी-खासी संख्या में जीते थे। जिन्ना को सबसे बड़ा धक्का पंजाब में मिला था जहां की एसेम्बली में उसके केवल दो सदस्य ही जीत पाये थे और यहां कांग्रेस व पंजाब यूनियनिस्ट पार्टी को शानदार जीत हासिल हुई थी। आज के उत्तर प्रदेश और तब के सेंट्रल प्राविंस में भी मुस्लिम लीग को 1936 में खास सफलता नहीं मिल पाई थी और कांग्रेस पार्टी को पूर्ण बहुमत प्राप्त हुआ था जहां उसकी सरकार का गठन हुआ था। इस राज्य में मुस्लिम लीग के प्रतिनिधियों को मन्त्रिमंडल का सदस्य बनाने के लिए कांग्रेस ने शर्त रख दी थी कि उन्हें लीग छोड़कर कांग्रेस का सदस्य बनना होगा। इससे जिन्ना बिफर उठा था और उसने ऐलान कर दिया था कि वह अब से खुल कर साम्प्रदायिक राजनीति करेगा। यह स्थिति अंग्रेजों के अनुकूल थी। अतः उन्होंने जिन्ना को खुलकर ऐसा करने दिया और संयोग से अक्तूबर 1939 से दूसरा विश्वयुद्ध भी शुरू हो गया। जिन्ना की इस राजनीति का असर यह हुआ कि 1937 में कांग्रेस कार्य समिति में राष्ट्रगीत वन्दे मातरम् को लेकर एक लम्बा प्रस्ताव पारित हुआ जिसमें कहा गया कि इस गीत के केवल शुरू के दो छन्द ही गाये जायें जिनमें भारत धरा व इसके सभी 30 करोड़ लोगों का वर्णन है तथा शेष चार छन्दों को छोड़ दिया जाये जिनमें भारत माता की उपमा हिन्दू देवियों से की गई है। 1937 से पहले भारत के किसी भी मुसलमान को सभी छह छन्दों के गाये जाने से परहेज नहीं था मगर जिन्ना के विरोध के बाद यह सिलसिला शुरू हुआ। पहली बार 1896 में कांग्रेस अधिवेशन में स्वयं गुरुदेव रवीन्द नाथ टैगोर ने इसका गायन किया। मगर 1905 में अंग्रेजों द्वारा बंगाल का विभाजन किये जाने पर इसके विरोध में जब बंगाली लोग सड़कों पर निकले तो यह गीत उनकी प्रेरणा का स्रोत बन गया और बाद में आजादी के आन्दोलन में लगे अन्य प्रान्तों के लोग भी इसका अनुसरण करने लगे। मगर आजाद भारत में इसके केवल शुरू के दो छन्द ही राष्ट्रगीत के रूप में अधिसूचित किये गये। अब जब इसके सभी छह छन्द गाने अनिवार्य किये गये हैं तो भारत में जिन्ना की मानसिकता वाले लोग इसका विरोध कर रहे हैं और इसे इस्लाम धर्म की भावनाओं को ठेस पहुंचाने वाला बता रहे हैं।

एचबीए1सी टेस्ट पर नया अध्ययनः डायबिटीज की चुनौतियां

डायबिटीज, जिसे आधुनिक युग की महामारी कहा जा रहा है, भारत में करोड़ों लोगों को अपनी चपेट में ले चुकी है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, भारत दुनिया का डायबिटीज कैपिटल है, जहां 10 करोड़ से अधिक लोग इस बीमारी से जूझ रहे हैं। डायबिटीज के निदान और नियंत्रण के लिए एचबीए1सी (ग्लाइकोसिलेटेड हीमोग्लोबिन) टेस्ट को 'सोने का मानक' माना जाता रहा है। यह टेस्ट पिछले दो-तीन महीनों की औसत ब्लड शुगर लेवल को मापता है, जो आसान, गैर-आक्रामक और विश्वसनीय लगता है। लेकिन फरवरी 2026 में 'द लैंसेट रीजनल हेल्थ-साउथ-ईस्ट एशिया' जर्नल में प्रकाशित एक नए अध्ययन ने इस धारणा को चुनौती दे दी है। यह अध्ययन, जो विशेष रूप से भारतीय और दक्षिण एशियाई आबादी पर केंद्रित है, चेतावनी देता है कि एनीमिया, हीमोग्लोबिन विकृतियों और अन्य कारकों के कारण एचबीए1सी टेस्ट गलत निदान कर सकता है, जिससे डायबिटीज का पता चार साल तक देरी से चल सकता है।

यह अध्ययन, प्रोफेसर अनूप मिश्रा और उनके सहयोगियों द्वारा लिखित, एचबीए1सी की सीमाओं पर गहन समीक्षा करता है। भारत में एनीमिया एक महामारी है-राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (एनएफएचएस-5) के अनुसार, 50 प्रतिशत से अधिक वयस्क महिलाएं और 25 प्रतिशत पुरुष एनीमिया से प्रभावित हैं। एनीमिया आयरन की कमी से लाल रक्त कोशिकाओं की संख्या घटाता है, जिससे एचबीए1सी का स्तर कृत्रिम रूप से ऊंचा हो जाता है। परिणामस्वरूप, जो व्यक्ति डायबिटीज से ग्रस्त नहीं है, उसे गलत तरीके से डायबिटीज का मरीज घोषित कर दिया जा सकता है। इसके विपरीत, हीमोग्लोबिनोपैथी (जैसे थैलेसीमिया, जो भारत में 4 प्रतिशत आबादी को प्रभावित करता है) या जी6पीडी की कमी एचबीए1सी को कम दिखा सकती है, जिससे वास्तविक डायबिटीज वाले मरीजों का निदान देरी से होता है।

अध्ययन के अनुसार, दक्षिण एशियाई लोगों में एचबीए1सी और वास्तविक ब्लड ग्लूकोज के बीच सहसंबंध कमजोर है। उदाहरण के लिए, एनीमिया वाले क्षेत्रों में एचबीए1सी पर निर्भरता से डायबिटीज का निदान 20-30 प्रतिशत मामलों में गलत हो सकता है। यह न केवल निदान को प्रभावित करता है, बल्कि उपचार को भी, अनावश्यक दवाएं या देरी से उपचार से जटिलताएं जैसे हृदय रोग, किडनी फेलियर बढ़ सकती हैं। अध्ययन की एक महत्वपूर्ण बात यह है कि भारत जैसे विकासशील देशों में जहां एनीमिया और आनुवंशिक विकार आम हैं, एचबीए1सी को अकेले इस्तेमाल करना जोखिमपूर्ण है। यह पश्चिमी आबादी पर आधारित मानकों को सीधे लागू करने की भूल को उजागर करता है।

भारत में डायबिटीज का बोझ पहले से ही भारी है। आईसीएमआर के अनुसार, 2030 तक यह 13.5 करोड़ तक पहुंच सकता है। लेकिन यह अध्ययन बताता है कि लाखों लोग अनदेखे डायबिटीज से पीड़ित हो सकते हैं, क्योंकि एचबीए1सी पर अंधविश्वास ने अन्य टेस्ट जैसे ओरल ग्लूकोज टॉलरेंस टेस्ट (ओजीटीटी) या फास्टिंग प्लाज्मा ग्लूकोज (एफपीजी) को पीछे धकेल दिया है। विशेष रूप से ग्रामीण भारत और महिलाओं के लिए यह खतरा अधिक है, जहां एनीमिया दर 60 प्रतिशत से ऊपर है। देरी से निदान से न केवल व्यक्तिगत स्वास्थ्य बिगड़ता है, बल्कि स्वास्थ्य प्रणाली पर बोझ भी बढ़ता है। चिंता का मतलब घबराहट नहीं होना चाहिए। यह अध्ययन एक जागृति का संकेत है। भारतीयों की आनुवंशिक संरचना-जैसे 'थ्रिफ्टी जीन' हाइपोथेसिस, जो दक्षिण एशियाई लोगों में इंसुलिन रेजिस्टेंस को बढ़ावा देती है-पहले से ही डायबिटीज को जन्मभूमि बनाती है। लेकिन एचबीए1सी की सीमाएं जानकर हम बेहतर रणनीति बना सकते हैं। अगर हम इसे नजरअंदाज करेंगे, तो 'साइलेंट किलर' जाने जाने वाली डायबिटीज और घातक हो जाएगी। गौरतलब है कि फार्मा उद्योग, जो डायबिटीज मार्केट से सालाना अरबों-खरबों कमाता है, इस अध्ययन से हलचल में आ सकता है। भारत में एचबीए1सी टेस्ट किट्स का बाजार 500 करोड़ रुपये से अधिक का है। इस अध्ययन से बड़ी कमानियों की बिक्री प्रभावित हो सकती है, क्योंकि डॉक्टर अब कॉम्बिनेशन टेस्ट की सिफारिश करेंगे। संभावना है कि फार्मा कंपनियां वैकल्पिक डायग्नोस्टिक टूल्स पर निवेश बढ़ाएंगी। दवाओं के मामले में भी सदियों से चली आ रही दवाओं पर सीधा असर कम होगा, क्योंकि निदान गलत होने से उपचार की शुरुआत प्रभावित होगी, लेकिन एक बार निदान हो जाए तो दवाओं को उसी मुताबिक दिया जाएगा। हालांकि, फार्मा इंडस्ट्री की लॉबी इस अध्ययन को चुनौती दे सकती है, यह दावा करते हुए कि एचबीए1सी अभी भी उपयोगी है। वहीं वैश्विक स्तर पर, कुछ कंपनियां, जो अलग तरह के जांच उपकरण व दवाएं बेचती हैं, इस नए अध्ययन को मार्केटिंग के लिए इस्तेमाल कर सकती हैं। कुल मिलाकर, यह उद्योग के लिए एक अवसर भी साबित हो सकता है, जो बाजार को नया आयाम देगा। लेकिन अगर प्रतिक्रिया नकारात्मक हुई, तो नियामक दबाव बढ़ सकता है। भारतीय डॉक्टर इस अध्ययन से सहमत हैं, लेकिन घबराहट की बजाय सतर्कता की वकालत करते हैं। प्रोफेसर अनूप मिश्रा, अध्ययन के मुख्य लेखक और फोर्टिस सीकेडी हॉस्पिटल के चेयरमैन, कहते हैं, 'एचबीए1सी पर पूर्ण निर्भरता से डायबिटीज की स्थिति का गलत वर्गीकरण हो सकता है। कुछ लोग अनुचित रूप से देरी से निदान हो सकते हैं।' एंडोक्राइन सोसाइटी ऑफ इंडिया के एक सर्वे में 70 प्रतिशत डॉक्टरों ने कहा कि एनीमिया वाले मरीजों में ओजीटीटी को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। इस अध्ययन के बाद, डॉक्टरों का मत है कि एचबीए1सी उपयोगी है, लेकिन अकेला नहीं। वो मानते हैं कि मिली-जुली प्रक्रिया के तहत डायबटीज जैसी बीमारी का निदान किया जा सकता है।

यह अध्ययन हमें निष्क्रियता से हटाकर सक्रियता की ओर ले जाता है। विशेषज्ञों के अनुसार अगर आप एचबीए1सी टेस्ट करवा रहे हैं, तो सीबीसी (कम्प्लीट ब्लड काउंट) से एनीमिया भी चेक जरूर करवाएं। अगर एनीमिया है, तो ओजीटीटी या एफपीजी पर स्विच करें। इसके साथ ही 30 वर्ष से ऊपर वाले व्यक्तियों को हर साल कम से कम दो टेस्ट-एफपीजी और एचबीए1सी करवाने चाहिए। डायबिटीज का 80 प्रतिशत जोखिम रोकथाम योग्य है। दैनिक 30 मिनट व्यायाम, फाइबर-युक्त आहार (दालें, सब्जियां) और वजन नियंत्रण अपनाएं। अध्ययन दिखाता है कि भारतीयों में वजन बढ़ने से इंसुलिन रेजिस्टेंस तेजी से बढ़ता है। एनीमिया रोकने के लिए आहार में पालक, गुड़ और पौष्टिक आहार शामिल करें, लेकिन अपने डॉक्टर की सलाह से। अस्पतालों और सामाजिक संस्थाओं को सामुदायिक स्तर पर कैंप लगाने चाहिए, जिससे कि जागरूकता बढ़े। सस्ते व आसानी से उपलब्ध ग्लूकोमीटर या ऐप्स से घर पर मॉनिटरिंग करें। ये कदम न केवल डायबिटीज को नियंत्रित करेंगे, बल्कि समग्र स्वास्थ्य भी सुधारेंगे।

यह लैंसेट अध्ययन एचबीए1सी को खारिज नहीं करता, बल्कि इसकी सीमाओं को उजागर करता है। भारतीयों के लिए यह एक जागृति का क्षण है, चिंता करें, लेकिन उचित कार्रवाई भी करें। डायबिटीज से लड़ाई में सटीक निदान पहला कदम है। अगर हम इसे अपनाएं, तो भारत न केवल डायबिटीज कैपिटल से उबर सकता है, बल्कि हेल्थकेयर का वैश्विक मॉडल भी बन सकता है। समय है सोच बदलने का-स्वास्थ्य के लिए, भविष्य के लिए।

चाय की प्याली से सेवा का संकल्प आठ दोस्तों ने रचा गोसेवा का अद्भुत इतिहास

राजस्थान की धरती पर सेवा, त्याग और श्रद्धा की कहानियाँ नई नहीं हैं, लेकिन कोटा जिले के सांगोद कस्बे से निकली यह कथा अपने आप में एक अनोखी मिसाल है। यह कहानी किसी बड़े उद्योगपति या सरकारी अनुदान से शुरू नहीं होती, बल्कि एक साधारण सी चाय की प्याली से जन्म लेती है। कोरोना महामारी के कठिन समय में जब दुनिया अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रही थी, तब आठ मित्रों ने एक ऐसा निर्णय लिया जिसने न केवल उनकी सोच बदली, बल्कि सैकड़ों निराश्रित और घायल गोवंशों के जीवन को भी नई दिशा दे दी।

यह आठ मित्र प्रतिदिन शाम को एक चाय की दुकान पर मिलते थे। रोज की 80 रुपए की चाय उनके लिए केवल पेय नहीं, बल्कि आपसी संवाद और मित्रता का माध्यम थी। महामारी के बाद जब जीवन धीरे-धीरे सामान्य होने लगा, तब उन्होंने तय किया कि अब यह 80 रुपए केवल चाय पर खर्च नहीं होंगे। उन्होंने सोचा कि क्यों न इन पैसों को किसी सार्थक कार्य में लगाया जाए। यही छोटा-सा संकल्प आगे चलकर 'कृष्ण दरबार गो सेवा संस्थान' के रूप में साकार हुआ।

भारत में गाय को माता का दर्जा दिया गया है। धार्मिक, सांस्कृतिक और कृषि जीवन में उसका विशेष महत्व रहा है। किंतु आधुनिक जीवन की आपाधापी में अक्सर सड़क किनारे घायल, बीमार और असहाय गोवंश देखने को मिल जाते हैं। कई स्थानों पर गोशालाएँ अवश्य हैं, लेकिन संसाधनों और सेवा की कमी के कारण हर पशु तक समय पर सहायता नहीं पहुँच पाती। ऐसे में सांगोद के इन मित्रों ने यह महसूस किया कि सेवा का वास्तविक अर्थ केवल भावनात्मक जुड़ाव नहीं, बल्कि ठोस व्यवस्था खड़ी करना है।

शुरुआत में उन्होंने चाय छोड़कर बचाए गए पैसों से जरूरतमंद लोगों की सहायता की। धीरे-धीरे उनके इस प्रयास से अन्य लोग भी जुड़ते गए। कोई 10 रुपये देता, कोई 20, कोई 50 और कभी-कभी 100 रुपये भी। छोटी-छोटी राशियाँ मिलकर हजारों में बदलने लगीं। यह केवल धन संग्रह नहीं था, बल्कि समाज की आस्था और विश्वास का संगम था।

इसी विश्वास की नींव पर गोवंशों

के लिए एक अस्पताल की स्थापना का विचार जन्मा। आज 'कृष्ण दरबार गो सेवा संस्थान' केवल एक गोशाला नहीं, बल्कि आधुनिक सुविधाओं से युक्त एक सेवा केंद्र बन चुका है। यहाँ आईसीयू और जनरल वार्ड की व्यवस्था है। जब कोई घायल या गंभीर रूप से बीमार गाय लाई जाती है तो उसे पहले आईसीयू में रखा जाता है, जहाँ उसकी विशेष देखभाल की जाती है। स्थिति सुधरने पर उसे जनरल वार्ड में स्थानांतरित कर दिया जाता है। साफ-सुथरे शेड, हरा-भरा चारा और प्रशिक्षित वेटरनरी डॉक्टरों की टीम इस सेवा को व्यवस्थित और प्रभावी बनाती है।

इस संस्थान की सबसे बड़ी विशेषता है यहाँ कार्यरत लोगों का समर्पण। सात दिनों के लिए सात इंचार्ज नियुक्त किए गए हैं और 22 सहायक दिन-रात ड्यूटी देते हैं। यह पूरी सेवा निशुल्क है। रात के दो बजे भी यदि सूचना मिलती है कि कहीं कोई गाय घायल अवस्था में पड़ी है, तो तुरंत वाहन रवाना हो जाता है। स्वस्थ होने के बाद गोवंश को नगर पालिका की गोशाला में भेज दिया जाता है, जिससे उसकी आगे की देखभाल सुनिश्चित हो सके।

स्थानीय लोग इस स्थान को 'जीवंत माता का मंदिर' कहते हैं। वास्तव में यह केवल अस्पताल नहीं, बल्कि करुणा और संवेदना का जीवंत उदाहरण है। यहाँ सेवा किसी दिखावे या प्रचार का माध्यम नहीं, बल्कि आंतरिक आस्था का परिणाम है। यह संदेश देता है कि यदि संकल्प सच्चा हो तो सीमित साधनों से भी असंभव प्रतीत होने वाले कार्य पूरे किए जा सकते हैं।

आज देश में गोशालाओं के निर्माण पर लाखों-करोड़ों रुपये खर्च किए जाते हैं। गाय के नाम पर चंदा भी जुटाया जाता है। किंतु कई बार व्यवस्थाएँ अपेक्षित स्तर तक नहीं पहुँच पातीं। ऐसे समय में सांगोद के इन मित्रों का प्रयास यह सिद्ध करता है कि परिवर्तन केवल बड़े संसाधनों से नहीं, बल्कि बड़े हृदय से आता है। उन्होंने यह दिखाया कि चाय पर होने वाली चर्चा यदि सेवा के संकल्प में बदल जाए तो हजारों रुपये की बचत समाज के कल्याण में लग सकती है।

यह कहानी युवाओं के लिए विशेष प्रेरणा है। अक्सर यह कहा जाता है कि बड़े कार्य करने के लिए बड़ी पूँजी चाहिए। परंतु यहाँ पूँजी से अधिक महत्त्वपूर्ण था उद्देश्य। आठ मित्रों का छोटा-सा त्याग एक आंदोलन में बदल गया। उन्होंने यह साबित किया कि सामाजिक परिवर्तन का मार्ग किसी सरकारी योजना से ही नहीं, बल्कि व्यक्तिगत संकल्प से भी प्रशस्त हो सकता है।

कोटा और सांगोद क्षेत्र में यह संस्थान अब आशा का प्रतीक बन चुका है। घायल गोवंशों को नया जीवन मिल रहा है और समाज में सेवा की भावना प्रबल हो रही है। यह पहल बताती है कि यदि हर व्यक्ति अपने दैनिक जीवन से थोड़ी-सी राशि बचाकर किसी सामाजिक उद्देश्य में लगाए, तो कितने ही अस्पताल, विद्यालय और आश्रय स्थल खड़े किए जा सकते हैं।

चाय की प्याली छोड़ने का यह निर्णय केवल आर्थिक बचत नहीं था, बल्कि आत्मानुशासन और त्याग का अभ्यास भी था। यह संदेश देता है कि छोटी-सी आदत में परिवर्तन भी बड़े सामाजिक बदलाव का कारण बन सकता है।

सांगोद के इन आठ मित्रों ने यह सिद्ध कर दिया कि सच्ची सेवा वही है जो बिना किसी अपेक्षा के की जाए। उनका यह प्रयास आने वाली पीढ़ियों के लिए मार्गदर्शक है। यह कहानी हमें सोचने पर विवश करती है कि हम अपने दैनिक जीवन में कौन-सा छोटा त्याग कर सकते हैं, जो समाज के लिए बड़ा योगदान बन सके।

अंततः यह केवल गोवंशों के उपचार की कथा नहीं, बल्कि मानवीय संवेदना की विजय गाथा है। चाय की एक प्याली से शुरू हुआ यह सफर आज सैकड़ों जीवनों को बचाने का माध्यम बन चुका है। यही वह प्रेरणा है, जो किसी भी गोशाला या सेवा संस्थान के निर्माण का मार्ग प्रशस्त कर सकती है और समाज को यह सिखा सकती है कि सच्ची श्रद्धा कर्म से सिद्ध होती है, शब्दों से नहीं।

कांतिलाल मांडोत

स्वामी- स्वतंत्र प्रभात मीडिया, मुद्रक एवं प्रकाशक प्रीती शुक्ल द्वारा सुशीला स्टेडी बेल एकेडमी 117-मोहल्ला बिजय लक्ष्मी नगर परगना सौराचाद तहसील व जनपद सीतापुर से प्रकाशित तथा महावीर आफसेट 28, होनेट रोड लखनऊ से मुद्रित। सम्पादक रवि कुमार अवस्थी समाचार पत्र में तमे समस्त समाचार संवाददाताओं के अपने श्रोत एवं संकलन हैं, जिनसे सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **नोट:** उपरोक्त सभी पद अवैतनिक एवं स्वयंसेवी हैं तथा समाचार पत्र से सम्बंधित सारे विवादों का न्याय क्षेत्र सीतापुर होगा। R.NI NO. UPHIN/2012/43078 मो0 नं0-9511151254, E-Mail: news@swatantraprabhat.com

संक्षिप्त खबरें

ई रिक्शा में अनियंत्रित मोटरसाइकिल की टक्कर से बाइक सवार घायल जिला अस्पताल रेफर

महराजगंज रायबरेली। क्षेत्र के कुबना मोड़ के पास महराजगंज की तरह आ रहे ई रिक्शा में पीछे से आ रही तेज रफ्तार अनियंत्रित मोटरसाइकिल की टक्कर हो गई। टक्कर के बाद दोनों मोटरसाइकिल सवार गंभीर रूप से घायल हो गए, चिकित्सकों ने दोनों को गंभीर हालत में जिला अस्पताल रेफर कर दिया है। सोमवार शाम करीब साढ़े पांच बजे एक ही मोटरसाइकिल से हलोर की तरफ से दरियागंज निवासी नन्हे पुत्र रामहेत 24 वर्ष व आशीष पुत्र छोटेलाल उम 14 वर्ष आ रहे थे। कुबना गांव के मोड़ के पास उनकी मोटरसाइकिल अनियंत्रित होकर सामने से जा रहे ई रिक्शा में टकरा गई। टक्कर के बाद दोनों बाइक सवार सड़क किनारे खंती में जा गिरे। घटना के बाद दोनों घायलों को आसपास के लोगों ने सीएचसी पहुंचाया जहां चिकित्सकों ने प्राथमिक उपचार के बाद दोनों को गंभीर हालत में जिला अस्पताल रेफर कर दिया है।

शाहजहांपुर और भदोही में बनेंगी स्टेट यूनिवर्सिटी, विधान सभा में बिल पास

लखनऊ। विधानमंडल के बजट सत्र के छठे दिन सोमवार को विधान सभा में सरकार ने शाहजहांपुर व भदोही में राज्य विश्वविद्यालयों की स्थापना से जुड़े दो विधेयक पास करा लिए। इनमें उत्तर प्रदेश राज्य विश्वविद्यालय (संशोधन) विधेयक 2026 तथा उत्तर प्रदेश राज्य विश्वविद्यालय (द्वितीय संशोधन) विधेयक 2026 शामिल हैं। उच्च शिक्षा मंत्री योगेन्द्र उपाध्याय ने कहा कि योगी सरकार का लक्ष्य उच्च शिक्षा को समाज के अंतिम पायदान तक पहुंचाना है। उन्होंने पंडित दीनदयाल उपाध्याय के अंत्योदय और एकात्म मानववाद के दर्शन का उल्लेख करते हुए कहा कि सरकार शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का सशक्त माध्यम मानकर कार्य कर रही है। ग्रामीण, पिछड़े और वंचित क्षेत्रों तक विश्वविद्यालय पहुंचाने की दिशा में लगातार ठोस निर्णय लिए जा रहे हैं, जिससे युवाओं को अपने ही क्षेत्र में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध हो सके।

विश्वविद्यालय के रूप में किया जाएगा विकसित

इसी के तहत भदोही जिले में स्थित काशी नरेश स्नातकोत्तर महाविद्यालय को उन्नत कर विश्वविद्यालय के रूप में विकसित किया जाएगा। इससे आसपास के 23 महाविद्यालयों का संबद्धीकरण संभव होगा और क्षेत्र के हजारों विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा, शोध और नवाचार के बेहतर अवसर मिलेंगे। यह निर्णय पूर्वांचल क्षेत्र में उच्च शिक्षा के नए केंद्र के रूप में विकसित होने की दिशा में अहम कदम है। द्वितीय संशोधन विधेयक के माध्यम से शाहजहांपुर स्थित मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट की शैक्षिक इकाइयों को उच्चीकृत कर स्वामी सुखदेवानंद विश्वविद्यालय की स्थापना का मार्ग प्रशस्त किया गया है। ट्रस्ट द्वारा एमओयू करके अपनी चल-अचल संपत्ति और संसाधन सरकार को हस्तांतरित कर विश्वविद्यालय स्थापना में सहयोग दिया गया है। इससे 60 क्षेत्रीय महाविद्यालयों का संबद्धीकरण होगा और युवाओं को स्थानीय स्तर पर शिक्षा व रोजगार के नए अवसर मिलेंगे। इसके लिए सरकार अध्यादेश पहले ही ला चुकी है, अब उसके स्थान पर विधेयक को स्वीकृति प्रदान की गई है।

ई रिक्शा में अनियंत्रित मोटरसाइकिल की टक्कर से बाइक सवार घायल जिला अस्पताल रेफर

महराजगंज रायबरेली। क्षेत्र के कुबना मोड़ के पास महराजगंज की तरह आ रहे ई रिक्शा में पीछे से आ रही तेज रफ्तार अनियंत्रित मोटरसाइकिल की टक्कर हो गई। टक्कर के बाद दोनों मोटरसाइकिल सवार गंभीर रूप से घायल हो गए, चिकित्सकों ने दोनों को गंभीर हालत में जिला अस्पताल रेफर कर दिया है। सोमवार शाम करीब साढ़े पांच बजे एक ही मोटरसाइकिल से हलोर की तरफ से दरियागंज निवासी नन्हे पुत्र रामहेत 24 वर्ष व आशीष पुत्र छोटेलाल उम 14 वर्ष आ रहे थे। कुबना गांव के मोड़ के पास उनकी मोटरसाइकिल अनियंत्रित होकर सामने से जा रहे ई रिक्शा में टकरा गई। टक्कर के बाद दोनों बाइक सवार सड़क किनारे खंती में जा गिरे।

सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मेरा नाम श्रीमती प्रमोद बाला स्थायी निवासी-538/ ।। / योगी नगर, अहिबरनपुर, त्रिवेणी नगर- थर्ड सीतापुर रोड, लखनऊ- 226020 मैंने अपने एक रिश्तेदार अजय सिंह पुत्र हरमोहन सिंह निवासी-308 बी, श्री राम टावर, अशोक मार्ग लखनऊ 01/09/2016 को एक कमरा 11 माह के लिए किराए पर दिया था मेरे उस रिश्तेदार ने अपना आधार कार्ड व पैन कार्ड मेरे उक्त पते पर बनवा लिया था 11 महीने के बाद मेरे रिश्तेदार अजय सिंह ने कमरा खाली कर दिया था अतः अब भविष्य में उक्त दस्तावेज अथवा पते का किसी भी तरीके का दुरुपयोग किया अब भविष्य में उक्त दस्तावेज अथवा पते का किसी भी तरीके का दुरुपयोग किया जाता है तो उसकी जिम्मेदारी मेरी नहीं होगी किसी भी दुरुपयोग के लिए उसके जिम्मेदार अजय सिंह पुत्र हरमोहन सिंह ही होंगे ।

सिद्धार्थनगर में संग्रह अमीन से मारपीट में रिवॉल्वर का लाइसेंस निरस्त होगा, एक महीने में गिरफ्तारी के आश्वासन पर राजस्व कर्मियों का धरना खत्म

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सिद्धार्थनगर, मोहाना थाना क्षेत्र के रोहूढीला के सिंगहा गांव में 3 फरवरी को बकाया वसूली के दौरान संग्रह अमीन से मारपीट और सरकारी कार्य में बाधा डालने के मामले में लगातार 8दिनों से चल रहा राजस्व संग्रह कर्मियों का धरना सोमवार 16 फरवरी को प्रशासन के आश्वासन के बाद समाप्त हो गया। प्रशासन ने संघ की प्रमुख मांगों पर अमल करते हुए आरोपियों के शस्त्र लाइसेंस निरस्तीकरण की प्रक्रिया शुरू करने और एक माह के भीतर गिरफ्तारी सुनिश्चित करने का भरोसा दिया है।

यह मामला उस समय सामने आया जब नौगढ़ तहसील के संग्रह अमीन सुवाष चंद्र राजस्व टीम के साथ मोहाना थाना क्षेत्र के रोहूडीला गांव में बैंक बकाया की वसूली और कुर्की की कार्रवाई के लिए पहुंचे थे। आरोप है कि इस दौरान बकायेदार पक्ष के दो युवक उग्र हो गए और संग्रह अमीन के साथ गाली-गलौज और मारपीट करने लगे। मामले में मोहाना थानाध्यक्ष जितेंद्र सिंह ने तत्काल मुकदमा दर्ज कर गिरफ्तारी के लिए पुलिस टीम गठित कर दी थी।

घटना के विरोध में उत्तर प्रदेश राजस्व संग्रह अमीन संघ ने 9 फरवरी से जिला अध्यक्ष राजेश कुमार मिश्रा के नेतृत्व में सिद्धार्थनगर कलेक्ट्रेट परिसर में धरना-प्रदर्शन शुरू किया। धरने में जिले भर के संग्रह अमीनों ने भाग लिया और आरोपियों की शीघ्र गिरफ्तारी तथा कठोर कार्रवाई की मांग की। संघ पदाधिकारियों ने कहा कि सरकारी कार्य के दौरान कर्मचारियों के साथ इस तरह की मारपीट बेहद गंभीर मामला है और इससे कर्मचारियों की सुरक्षा पर सवाल खड़े होते हैं।

लगातार 8दिनों तक चले धरने के बाद सदर तहसील के उपजिलाधिकारी कल्याण सिंह मौर्य स्वयं धरना स्थल पर पहुंचे और संघ पदाधिकारियों से वार्ता की। इस दौरान उन्होंने बताया कि प्रशासन द्वारा आरोपियों के शस्त्र लाइसेंस निरस्तीकरण के लिए रिपोर्ट प्रेषित कर दी गई है। साथ ही उन्होंने आश्वासन दिया कि पुलिस द्वारा कार्रवाई करते हुए एक माह के भीतर आरोपियों की गिरफ्तारी सुनिश्चित की जाएगी। जिला अध्यक्ष राजेश कुमार मिश्रा ने प्रशासन के आश्वासन के बाद धरना समाप्त करने की घोषणा करते हुए कहा कि संगठन फिलहाल प्रशासन को एक माह का समय दे रहा है। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि तय समय सीमा के भीतर आरोपियों की गिरफ्तारी नहीं हुई तो संगठन पुनः धरना-प्रदर्शन और आंदोलन के लिए बाध्य होगा।फिलहाल प्रशासन के आश्वासन के बाद धरना खत्म हो गया है

बड़ा इमामबड़ा घूमने जा रहे पर्यटकों की जेब पर बढ़ा खर्च, 18 फरवरी से इतने रुपये बढ़ जाएंगे टिकट के दाम

लखनऊ। जिला प्रशासन और हुसैनाबाद ट्रस्ट ने पर्यटकों को आकर्षित करने की पहल की है। इसके तहत बड़ा इमामबाड़ा का टिकट आनलाइन देने की व्यवस्था की गई है। इसकी वेबसाइट https://lucknowimambara.com/ बना दी गई है, जिस पर 18 फरवरी से टिकट मिलेगा। टिकट में 10 रुपये की वृद्धि भी की जा रही है। वेबसाइट बनने के बाद जिलाधिकारी विशाख जी. ने दो दिन पहले बड़ा इमामबाड़ा का निरीक्षण किया था। उनकी उपस्थिति में इस वेबसाइट पर ट्रायल किया गया था। डमी टिकट जारी किए गए थे। ट्रस्ट के सहायक कार्यालय अधीक्षक हबीबुल हसन ने बताया कि अभी बड़ा इमामबाड़ा का टिकट मूल्य 50 रुपये है। 18 फरवरी से यह 60 रुपये का हो जाएगा। उन्होंने बताया कि करीब 12 वर्ष पहले टिकट के दाम बढ़ाए गए थे। इसके बाद अब वृद्धि की गई है। इस टिकट से बड़ा इमामबाड़ा, भूलभुलैया और प्राचीन शाही बाउली (सीढ़ीदार कुआं) देख सकेंगे।

जनता से जुड़े गंभीर मुद्दों की सदन में उठाई आवाज लोकतंत्र में जनता की आवाज दवाई नहीं जा सकती- 'विधायक राहुल कुमार लोधी'

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

रायबरेली विधानसभा हरचंदपुर के कर्मठ, ईमानदार, जुझारू, मिलनसार व सबके चाहते विधायक राहुल कुमार लोधी अपने कार्यकाल में गरीब तथा मजलूमों के मसीहा के रूप में क्षेत्र में उभर कर सामने आए हैं समय-समय पर क्षेत्र की जनता की समस्याओं को जानने और समझने के लिए आम जनमानस के बीच अपनी एक अलग छवि बनाने वाले विधायक ने आज विधानसभा हरचंदपुर की जनता से जुड़े गंभीर मुद्दों को मजबूती और स्पष्टता के साथ सदन में उठाया और जनता का पक्ष रखते हुए कहा लोकतंत्र में जनता की आवाज दवाई नहीं जा सकती उसे मंच और न्याय मिलने की चाहिए यह जनता का मौलिक अधिकार है सदन में जिन प्रमुख विषयों पर सरकार से जवाब मांगा गया वह निम्न प्रकार है..

वोट चोरी और मतदाता सूची में गड़बड़ी तथा निष्पक्ष चुनाव ही लोकतंत्र की आत्मा है इसमें किसी भी प्रकार की धांधली नहीं होनी चाहिए, प्रधानों तथा कोटेदारों पर फर्जी मुकदमे जन प्रति निधियों का उत्पीड़न भी नहीं होना चाहिए, बिना पद के सरकारी एस्कॉर्ट का दुरुपयोग सत्ता का दुरुपयोग है इसे भी बंद किया जाना चाहिए, आम जनता की सहूलियत को ध्यान में रखते हुए सतांव को तहसील का दर्जा तथा क्षेत्र की वर्षों पुरानी मांग पर पर भी विचार होना चाहिए, सदन में बेबाकी से अपने मुद्दों को रखते हुए कहा कि हरचंदपुर की जनता ने जिस तरीके से मुझ पर भरोसा जताया है मेरा भी कर्तव्य बनता है कि उसे ईमानदारी से निभाएं जनता के हक और अधिकारों की लड़ाई के लिए सदन से संसद तक लड़ता रहूंगा. संवाददाता राजेश कुमार

महाशिवरात्रि में आदर्श ऋषि आश्रम में उमड़ा आस्था का सागर, विशाल भंडारा

● संत सर्वेश्वर दास जी व्यास ने अपने हाथों से परोसा प्रसाद

सेवा ही सच्ची साधना है। भूखे को भोजन और प्यासे को पानी देना सबसे बड़ा पुण्य है। संत सर्वेश्वर दास जी व्यास

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लालगंज (रायबरेली)। क्षेत्र के ऐहार गांव महाशिवरात्रि का पावन पर्व जब श्रद्धा और सेवा के रंग में रंग जाता है, तो उसका दृश्य मन को छू जाता है। ऐसा ही भावपूर्ण नजारा क्षेत्र के ऐहार गांव स्थित सुप्रसिद्ध बाल्हेश्वर मंदिर परिसर के निकट आदर्श ऋषि आश्रम में देखने को मिला, जहां भक्ति, सेवा और सद्भाव का अद्भुत संगम दिखाई दिया। सुबह की पहली किरण के साथ ही आश्रम परिसर में श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ने लगी। हर-हर महादेव के गगनभेदी जयघोष से पूरा वातावरण शिवमय हो उठा। दूर-दराज के गांवों से आए श्रद्धालु आस्था से भरे कदमों के साथ आश्रम पहुंचे और भगवान भोलेनाथ का स्मरण करते हुए भंडारे में शामिल हुए। विशाल भंडारे का आयोजन केवल भोजन वितरण भर नहीं था, बल्कि यह सेवा और समर्पण की एक जीवंत मिसाल बन गया। कार्यक्रम का सबसे भावुक क्षण तब देखने को मिला जब संत सर्वेश्वर दास जी व्यास स्वयं पंक्ति में बैठे श्रद्धालुओं को अपने हाथों से प्रसाद वितरित करते नजर आए। उनके चेहरे की सहज मुस्कान, विनम्र व्यवहार और हर व्यक्ति के प्रति समान भाव ने सबका मन मोह लिया। संत ने कहा, 'सेवा ही सच्ची साधना है। जब तक हम भूखे को भोजन और जरूरतमंद को सहारा नहीं देते, तब तक पूजा अधूरी है।' उनके इन शब्दों ने वहां मौजूद लोगों के हृदय को छू लिया। भंडारे में पूड़ी, सब्जी और खीर का प्रसाद श्रद्धालुओं को प्रेमपूर्वक परोसा गया। प्रशासनिक अधिकारी भी इस आध्यात्मिक वातावरण से प्रभावित हुए। एडीएम प्रशासन और एसडीएम डलमऊ एवं पुलिस प्रशासन सहित अन्य अधिकारी आश्रम पहुंचे, प्रसाद ग्रहण किया और आयोजन की सराहना की।

पूरा दिन आश्रम परिसर आस्था, सेवा और सौहार्द की भावना से सराबोर रहा। स्वयंसेवक भी पूरे समर्पण के साथ सेवा में जुटे रहे। श्रद्धालुओं का कहना था कि ऐसे आयोजन केवल धार्मिक परंपरा नहीं, बल्कि समाज में एकता और प्रेम का संदेश भी देते हैं। महाशिवरात्रि के इस पावन अवसर पर आदर्श ऋषि आश्रम ने यह सिद्ध कर दिया कि जब भक्ति के साथ सेवा जुड़ जाती है, तो वह आयोजन एक पर्व से बढ़कर एक प्रेरणा बन जाता है।इस मौके पर सेवादार रामकुमार यादव, संतोष कुमार,पवन द्विवेदी, समाजसेवी इंद्रेश कुमार यादव, पंकज कुमार, प्रधान प्रतिनिधि राजेश फौजी,रजनू यादव, एडवोकेट कुमार विवेक दुबे, प्रियंक बाजपेई, बृजलाल तिवारी, प्रधान प्रतिनिधि शैलू सिंह, सल्लू कुशवाहा, भोला यादव आदि मौजूद रहे।

बृजमोहन लाल शकुंतला देवी इंटर कॉलेज मझिगवां बन्नी खरैला में विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

बिसवां, सीतापुर। तहसील क्षेत्र बिसवां के प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थान बृजमोहन लाल शकुंतला देवी इंटर कॉलेज मझिगवां बन्नी खरैला में राष्ट्रीय सेवा योजना के तत्वावधान में पर्यावरण संरक्षण विषयक विविध शैक्षिक एवं सृजनात्मक प्रतियोगिताओं का भव्य आयोजन संपन्न हुआ। कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों में प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता, जागरूकता एवं उत्तरदायित्व की भावना विकसित करना था। कार्यक्रम के अंतर्गत हाईस्कूल एवं इंटरमीडिएट के छात्र-छात्राओं द्वारा निबंध प्रतियोगिता, पोस्टर प्रतियोगिता तथा रंगोली प्रतियोगिता में उत्साहपूर्ण सहभागिता दर्ज की गई। विद्यार्थियों ने अपनी रचनात्मक अभिव्यक्ति के माध्यम से जलवायु परिवर्तन, वृक्षारोपण, जैव विविधता संरक्षण एवं सतत विकास जैसे समसामयिक विषयों पर गंभीर चिंतन प्रस्तुत किया। रंगोली एवं पोस्टर के माध्यम से प्रकृति संरक्षण का संदेश अत्यंत प्रभावी एवं आकर्षक रूप में उभरकर सामने आया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में नन्दकिशोर कैलाश चन्द्र महाविद्यालय टिकरा के निदेशक संतोष वर्मा उपस्थित रहे। विशिष्ट अतिथि डॉ. राहुल वर्मा एवं डॉ. पुष्पेंद्र सिंह ने संयुक्त रूप से विजेता छात्र-छात्राओं को प्रमाण-पत्र एवं मेडल प्रदान कर सम्मानित किया।

अपने प्रेरक संबोधन में अतिथियों ने विद्यार्थियों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति सजग एवं उत्तरदायी नागरिक बनने का संदेश दिया तथा राष्ट्रीय सेवा योजना की महत्ता पर प्रकाश डाला।इस अवसर पर संस्था के प्रबंधक डॉ. सुधाकर वर्मा ने विद्यार्थियों के रचनात्मक प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि 'पर्यावरण संरक्षण केवल पाठ्यक्रम का विषय नहीं, बल्कि हमारा सामाजिक एवं नैतिक दायित्व है।' उन्होंने प्रतियोगिताओं के सफल आयोजन पर समस्त शिक्षकों एवं प्रतिभागियों को बधाई देते हुए इसे जन-जागरूकता की दिशा में महत्वपूर्ण पहल बताया। कॉलेज के प्रधानाचार्य दिवाकर वर्मा, उपप्रधानाचार्य सतीश चंद्र वर्मा, प्रवक्ता कमलेश भार्गव, राकेश वर्मा, पुष्पेंद्र कुमार, जितेंद्र कुमार, विकास निगम, लवकुश वर्मा सहित समस्त शिक्षकगण एवं कर्मचारीगण की गरिमामयी उपस्थिति ने कार्यक्रम को विशेष ऊँचाई प्रदान की। कार्यक्रम का समापन पर्यावरण संरक्षण के सामूहिक संकल्प एवं धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ। यह आयोजन विद्यार्थियों के भीतर प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता, सामाजिक चेतना एवं सकारात्मक दृष्टिकोण को सुदृढ़ करने की दिशा में एक सार्थक एवं प्रेरणादायी पहल सिद्ध हुआ।

अल्टो मालिक को नुकसान का पैसा नहीं दिया तो डंपर चालक व क्लीनर से मारपीट कर किडनैप करके फतेहपुर टोल प्लाजा के आगे छोड़ा

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

कानपुर। अल्टो कार और डंपर में हुए मामूली एक्सीडेंट में अल्टो मालिक को नुकसान का पैसा नहीं दिया तो डंपर चालक व क्लीनर से मारपीट कर किडनैप करके फतेहपुर टोल प्लाजा के आगे छोड़ा। अल्टो मालिक इलाहाबाद के रहने वाले हैं और उनकी गिरफ्तारी के लिए टीम रवाना हो चुकी है। पुलिस उपायुक्त पूर्वी सत्यजीत गुप्ता ने बताया कि थाना चकेरी क्षेत्रान्तर्गत दिनांक 14/15 फरवरी 2026 की रात्रि लगभग 11:30 बजे एक सड़क दुर्घटना हुई, जिसमें एक डंपर और एक अल्टो कार के बीच टक्कर हुई। इस दुर्घटना में अल्टो कार को हल्का नुकसान पहुँचा।

दुर्घटना के उपरांत डंपर स्वामी की ओर से सूचना दी गई कि अल्टो कार के चालक द्वारा डंपर के चालक और क्लीनर के साथ मारपीट की गई तथा अल्टो वाहन को हुए नुकसान की भरपाई के लिए उनसे धनराशि की मांग की गई। आरोप यह भी लगाया गया कि पैसे न देने पर डंपर के चालक और क्लीनर को जबरन वाहन में बैठाकर ले जाया गया।

प्राप्त सूचना के आधार पर पुलिस द्वारा तत्काल सुसंगत धाराओं में एफआईआर पंजीकृत की गई और मामले की जांच प्रारंभ की गई। जिस मार्ग से दोनों व्यक्तियों को ले जाने की बात कही गई, उस रूट के सीसीटीवी कैमरों की जांच की गई। जांच के दौरान टोल प्लाजा (फतेहपुर मार्ग) के सीसीटीवी फुटेज में संबंधित अल्टो कार दिखाई दी। फुटेज में अल्टो कार में उसका चालक तथा डंपर का चालक और क्लीनर भी दिखाई दे रहे हैं। आगे की जांच में आज डंपर का चालक और क्लीनर दोनों सकुशल पुलिस के समक्ष उपस्थित हो गए/बरामद कर लिए गए हैं। वर्तमान में पुलिस द्वारा दोनों से विस्तृत पूछताछ की जा रही है, विशेष रूप से यह जानने के लिए कि वे पिछले लगभग 36 घंटे से कहाँ थे और पुलिस के संपर्क में क्यों नहीं आए।

निशुल्क नेत्र परीक्षण में 108 में 31 का होगा ऑपरेशन वीरेंद्र यादव

● कनहा ग्राम पंचायत भवन में आयोजित हुआ नेत्र परीक्षण कार्यक्रम

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

रायबरेली। स्वास्थ्य संबंधित विभिन्न समस्याओं से जूझ रहे गरीब तबके के लिए कनहा पंचायत भवन में बीते रविवार को स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया आयोजन की पहल जिला पंचायत सदस्य वीरेंद्र यादव डलमऊ तृतीय के द्वारा की गई जहां ग्राम प्रधान राम अभिलाष यादव की उपस्थिति में शिविर में एक सैकड़ा से ज्यादा रोगियों का नेत्र परीक्षण किया गया तथा जरूरत के हिसाब से रोगियों को निशुल्क चश्मा सहित ड्रॉप व दवा आदि मुहैया कराई गई सुबह 9:00 बजे से शुरू हुआ स्वास्थ्य शिविर दोपहर 1:00 तक चलता रहा इस दौरान करीब 108 लोगों का नेत्र परीक्षण किया गया जिनमें से 31 लोगों को मोतियाबिंद के ऑपरेशन हेतु चिन्हित किया गया तथा एक दर्जन से ज्यादा लोगों को चश्मा सहित आई ड्रॉप दी गई तथा शिविर में जिला पंचायत सदस्य वीरेंद्र यादव व ग्राम प्रधान द्वारा आए हुए ग्रामीणों को आयुष्मान कार्ड भी बनवाए गए और सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजना विकलांग, वृद्धावस्था ,विधवा पेंशन की जानकारी दी गई और जिला पंचायत सदस्य वीरेंद्र यादव द्वारा कहा गया की ग्रामीण क्षेत्रों में लगातार ऐसे आयोजन उनके प्रयास से जारी रहेंगे ताकि क्षेत्र की जनता को इलाज के अभाव में परेशानियां न उठानी पड़े इस मौके पर जगदीश यादव, के यश यादव, डॉ शैलेन्द्र कुमार, राजन मिश्रा, अरविंद शुक्ला, दीप कुमार, अखिलेश यादव, संजय कुमार, आलोक यादव, अनीश कुमार, विपिन कुमार, विवेक कुमार, बबलू चौधरी, राजेश कुमार, आशीष कुमार, वंश बहादुर सिंह, अंशु यादव, नीरज रावत, अर्जुन पासी, लाल गोपाल, शिवा लोधी, समेत सैकड़ो की संख्या में ग्रामवासी उपस्थित रहे।

भदोही में पांच नई चार पहिया पुलिस रिस्पॉन्स व्हीकल (पीआरवी) को हरी झण्डी दिखाकर किया गया सम्बन्धित थाना को रवाना

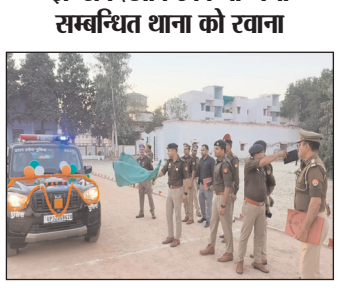

भदोही। उत्तर प्रदेश पुलिस की यूपी-112 सेवा को मजबूत बनाने के उद्देश्य से आज जनपद भदोही में पांच नई चार पहिया पुलिस रिस्पॉन्स व्हीकल (पीआरवी) को हरी झण्डी दिखाकर किया गया सम्बन्धित थाना को रवाना। अभिमन्यु मांगलिक, पुलिस अधीक्षक भदोही ने पुलिस लाइन ज्ञानपुर से 05 नई चार पहिया पीआरवी वाहनों को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। यह वाहन थाना क्षेत्र में आपातकालीन सेवाओं को तेज और प्रभावी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। ये नई पीआरवी वाहन जनपद भदोही के विभिन्न थाना क्षेत्रों में तैनात किए गए हैं, जो अपराध नियंत्रण, त्वरित प्रतिक्रिया और जन सुरक्षा को बढ़ावा देंगे। अपर पुलिस अधीक्षक शुभम अग्रवाल सभी क्षेत्र अधिकारीगण एवं अन्य पुलिस कर्मचारी उपस्थित रहे।

जिला पदाधिकारी के प्रतीकोष्ठ में जनता दरबार का आयोजन, आमजनों की समस्याओं की हुई सुनवाई

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

गोपालगंज (बिहार)- जिला पदाधिकारी के प्रतीकोष्ठ में जिला पदाधिकारी पवन कुमार सिन्हा द्वारा जनता दरबार का आयोजन किया गया। इस जनता दरबार का मुख्य उद्देश्य जिले के विभिन्न प्रखंडों से आए आम नागरिकों की समस्याओं को सुनना तथा उनका त्वरित एवं पारदर्शी समाधान सुनिश्चित करना रहा।

जनता दरबार में जिले के अलग-अलग प्रखंडों से आए फरियादियों ने अपनी समस्याएं जिला पदाधिकारी के समक्ष रखीं। सदानंद महतो, प्रखंड सिधवलिया, ग्राम मोहम्मदपुर द्वारा भूमि विवाद से संबंधित आवेदन प्रस्तुत किया गया। इसी क्रम में लखीचंद सह, प्रखंड बरौली, ग्राम खुरमपुर द्वारा भी भूमि विवाद का मामला रखा गया। इसके अतिरिक्त अजीज मियां, प्रखंड मंझा द्वारा इंद्रा आवास से संबंधित समस्या जिला पदाधिकारी के समक्ष रखी गई। वहीं राजेश कुमार, उम्र 38 वर्ष, ग्राम रामपुर माधो, प्रखंड कुचायकोट द्वारा भूमि विवाद से संबंधित आवेदन दिया गया।

जिला पदाधिकारी पवन कुमार सिन्हा ने जनता दरबार में उपस्थित सभी फरियादियों की समस्याओं को गंभीरता से सुना तथा संबंधित पदाधिकारियों को मामलों की जांच कर नियमानुसार शीघ्र निष्पादन करने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि जनता दरबार जिला प्रशासन और आम जनता के बीच संवाद का सशक्त माध्यम है, जिसके माध्यम से लोगों को अपनी समस्याएं सीधे प्रशासन तक पहुंचाने का अवसर मिलता है।

इस अवसर पर उप विकास आयुक्त गौरव कुमार एवं अपर समाहर्ता राजेश्वरी पाण्डेय एवं विशेष कार्य पदाधिकारी संदीप कुमार भी उपस्थित रहे। तीनों पदाधिकारियों ने भी फरियादियों की समस्याओं को सुना तथा जिला पदाधिकारी द्वारा दिए गए निर्देशों के अनुपालन को सुनिश्चित करने की बात कही।

जिला पदाधिकारी ने स्पष्ट रूप से कहा कि भूमि विवाद एवं आवास से संबंधित मामलों का समयबद्ध एवं निष्पक्ष निपटारा प्रशासन की प्राथमिकता है। उन्होंने संबंधित अंचल एवं प्रखंड स्तर के पदाधिकारियों को निर्देशित किया कि सभी मामलों की स्थलीय जांच कर रिपोर्ट शीघ्र प्रस्तुत करें, ताकि आमजनों को न्याय मिल सके।

मलिहाबाद में महाशिवरात्रि पर श्रद्धा और सेवा का संगम, घुसौली व रामपुर बस्ती में भव्य भंडारे का आयोजन

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

मलिहाबाद (लखनऊ)- पावन पर्व महाशिवरात्रि के अवसर पर मलिहाबाद क्षेत्र में श्रद्धा, भक्ति और सेवा का अद्भुत संगम देखने को मिला। क्षेत्र के घुसौली गांव स्थित प्राचीन महादेव मंदिर में भव्य भंडारे का आयोजन किया गया, जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने प्रसाद ग्रहण कर भगवान शिव का आशीर्वाद प्राप्त किया।

घुसौली गांव में आयोजित इस भंडारे का आयोजन डॉ. पवन वर्मा द्वारा कराया गया। सुबह से ही मंदिर परिसर में भक्तों की भीड़ उमड़ने लगी थी। शिव भक्तों ने विधि-विधान से भगवान भोलेनाथ का पूजन-अर्चन किया, जलाभिषेक किया और परिवार की सुख-समृद्धि की कामना की। पूजा-अर्चना के उपरांत भंडारे का शुभारंभ हुआ, जिसमें श्रद्धालुओं को प्रसाद के रूप में पूरी, सब्जी और खीर वितरित की गई। ग्रामीणों, महिलाओं, बुजुर्गों और बच्चों ने बड़े उत्साह के साथ भंडारे में सहभागिता की। पूरे आयोजन में सेवा भाव और अनुशासन की विशेष झलक देखने को मिली। वही साथ ही शिव बारात भी निकाली गई जिसमें डीजे पर भक्त झूमते नजर आए।

मंदिर परिसर को आकर्षक रूप से सजाया गया था। भक्तिमय वातावरण में 'हर-हर महादेव' और 'बोल बम' के जयकारों से पूरा क्षेत्र गूंज उठा। आयोजकों ने बताया कि महाशिवरात्रि का पर्व भगवान शिव और माता पार्वती के पावन मिलन का प्रतीक है, इसलिए इस दिन भक्ति और सेवा का विशेष महत्व होता है।

इसी क्रम में मलिहाबाद क्षेत्र के रामपुर बस्ती गांव में भी महाशिवरात्रि के अवसर पर हवन-पूजन का आयोजन किया गया। शिव मंदिर में विधिवत मंत्रोच्चार के साथ हवन संपन्न हुआ।

इस अवसर पर श्रीकांत शुक्ला, अतुल सिंह, पंकज सिंह और आदित्य ठाकुर सहित अन्य श्रद्धालु उपस्थित रहे। हवन के पश्चात ग्रामीणों एवं बच्चों को प्रसाद वितरित किया गया। गांव में धार्मिक कार्यक्रम के चलते उत्सव जैसा माहौल बना रहा। दोनों गांवों में आयोजित कार्यक्रमों ने सामाजिक एकता और आपसी सौहार्द का संदेश दिया। महाशिवरात्रि के इस पावन अवसर पर लोगों ने भक्ति, सेवा और सद्भाव की मिसाल पेश करते हुए धार्मिक परंपराओं को जीवंत बनाए रखा।

संक्षिप्त खबरें

25 लाख महिलाओं के खाते में माननीय मुख्यमंत्री द्वारा 10 हजार रुपये की प्रथम किस्त का हुआ अंतरण

गोपालगंज (बिहार)- मुख्यमंत्री महिला रोजगार योजना के तहत माननीय मुख्यमंत्री, बिहार नीतीश कुमार के कर कमलों से 16 फरवरी 2026 को बिहार राज्य की 25 लाख महिलाओं के खाते में स्वरोजगार के लिये 10 हजार रुपये की प्रथम क़िस्त की राशि का हुआ अंतरण लाभार्थियों में गोपालगंज जिले की 77794 महिलायें भी शामिल अब तक गोपालगंज जिला की 368425 महिलायें इस योजना से हो चुकी हैं लाभान्वित इस कार्यक्रम का जिला मुख्यालय में बेबकास्टिंग के माध्यम से हुआ लाइव प्रसारण, सैकड़ो महिलाएं सीधी जुड़ी समाहरणालय सभागार , गोपालगंज में आयोजित जिला स्तरीय कार्यक्रम में जिलाधिकारी पवन कुमार सिन्हा, DDC सर सहित अन्य पदाधिकारी तथा सैकडों जीविका दीदियाँ रही उपस्थित इस योजना के तहत प्रथम किश्त से अपना कारगर व्यवसाय स्थापित करने वाली महिलाओं को उनके व्यवसाय को बढ़ाने के लिये 2 लाख रुपये की दी जायेगी अतिरिक्त सहायता राशि

बलिया में 31 मार्च तक धारा 163 लागू: बोर्ड परीक्षा और त्योहारों को लेकर सख्ती, बिना अनुमति जुलूस-धरना पर रोक

बलिया। जनपद में शांति एवं कानून-व्यवस्था बनाए रखने के उद्देश्य से अपर जिला मजिस्ट्रेट अनिल कुमार ने भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता-2023 की धारा 163 (पूर्व धारा 144) के तहत 13 फरवरी 2026 से 31 मार्च 2026 तक निषेधाज्ञा लागू कर दी है। यह आदेश आगामी त्योहारों और बोर्ड परीक्षाओं के मद्देनजर जारी किया गया है। प्रशासन के अनुसार उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद द्वारा आयोजित हाईस्कूल व इंटरमीडिएट की बोर्ड परीक्षाएं 18 फरवरी से 12 मार्च 2026 तक संपन्न होंगी। साथ ही महाशिवरात्रि, होली, ईद, रामनवमी और महावीर जयंती जैसे प्रमुख त्योहार भी इसी अवधि में पड़ रहे हैं, जिसके चलते शांति भंग होने की आशंका को देखते हुए यह कदम उठाया गया है। निषेधाज्ञा के तहत पांच या उससे अधिक लोगों के सार्वजनिक रूप से एकत्र होने, जुलूस निकालने, धरना-प्रदर्शन करने पर प्रतिबंध रहेगा। विशेष परिस्थितियों में सक्षम अधिकारी से पूर्व अनुमति लेना अनिवार्य होगा। हालांकि पारंपरिक धार्मिक आयोजनों और जुमे की नमाज को छूट प्रदान की गई है। बिना अनुमति अस्त्र-शस्त्र, आग्नेयास्त्र, लाठी-डंडा या विस्फोटक सामग्री लेकर चलना प्रतिबंधित रहेगा। परीक्षा अवधि में केंद्रों के आसपास ध्वनि विस्तारक यंत्रों के प्रयोग पर रोक रहेगी तथा केंद्र से एक किलोमीटर की परिधि में फोटो कॉपी और स्कैनर मशीनों का संचालन बंद रहेगा। परीक्षा परिसर में मोबाइल फोन, ब्लूटूथ और अन्य संचार उपकरणों पर भी पूर्ण प्रतिबंध लगाया गया है। प्रशासन ने स्पष्ट किया है कि आदेश का उल्लंघन करने पर भारतीय न्याय संहिता-2023 की धारा 223 के तहत कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

दिल्ली के रोहिणी में महिला फिजियोथेरेपिस्ट पर चाकू से हमला, लड़की के कपड़े पहनकर आया था आरोपी जीजा

बाहरी दिल्ली। रोहिणी सेक्टर 24 के पॉकेट-17 में एक महिला फिजियोथेरेपिस्ट के क्लीनिक में घुसकर चाकू से हमला किया गया है। फिजियोथेरेपिस्ट के क्लीनिक में इलाज के बहाने आरोपित महिला के वेश में आया था और अचानक उसे चाकू मार दी। प्राथमिक जानकारी के मुताबिक, आरोपित फिजियोथेरेपिस्ट का जीजा है। लोगों ने मौके से भाग रहे आरोपित को पकड़कर पुलिस के हवाले कर दिया। फिजियोथेरेपिस्ट के गले में चाकू लगी है, उसे इलाज के लिए नजदीकी अस्पताल ले जाया गया है, जहां उसकी हालत गंभीर बताई जा रही है। आरोपित हमला कर क्लीनिक के टॉप फ्लोर पर भाग गया था, जहां कपड़े बदलने के बाद साथ वाली छत से अन्य छतों से होता हुआ भागने की कोशिश की, लेकिन लोगों ने आरोपित को पकड़ लिया। आरोपित ने विग लगाया हुआ था, जो क्लीनिक के अंदर ही गिर गया। क्योंकि फिजियोथेरेपिस्ट पर हमला होते ही वह चिल्लाते हुए बाहर आ गई थी। सामने ही मुख्य सड़क है, जहां आरोपित लोगों को देखकर छत पर भाग गया। बुध विहार थाना पुलिस आरोपित का बैग, चाकू, कपड़े और मोबाइल फोन जब्त कर पूछताछ कर रही है।

असम के उत्तर करीमगंज में महिला प्रतिनिधित्व को लेकर बढ़ी राजनीतिक सरगर्मी

● स्वतंत्रता के बाद पहली बार क्षेत्र के लोगों ने ज़मीन से जुड़ी और सामाजिक कार्यों में सक्रिय महिला मुन्नी छेत्री को प्रतिनिधित्व देने की मांग उठाई है।

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

श्रीभूमि संवाददाता असम में आगामी 26वीं विधानसभा चुनाव नजदीक आते ही राजनीतिक गतिविधियां तेज हो गई हैं। विभिन्न दलों के संभावित प्रत्याशी अपनी-अपनी दावेदारी मजबूत करने में जुटे हैं। इसी बीच उत्तर करीमगंज क्षेत्र में महिला प्रतिनिधित्व को लेकर चर्चा ने जोर पकड़ लिया है। मतदाताओं के एक वर्ग की राय है कि स्वतंत्रता के बाद पहली बार जमीनी स्तर से जुड़ी और सामाजिक कार्यों में सक्रिय किसी महिला को प्रतिनिधित्व मिलना चाहिए। इसी संदर्भ में समाजसेवी मुन्नी छेत्री का नाम प्रमुखता से सामने आ रहा है, जिन्हें क्षेत्र में एक संभावित मजबूत उम्मीदवार के रूप में देखा जा रहा है।

सूत्रों के अनुसार, मुन्नी छेत्री पिछले कई वर्षों से शिक्षा, महिला सशक्तिकरण, स्वास्थ्य जागरूकता और जरूरतमंद परिवारों की सहायता जैसे मुद्दों पर सक्रिय रही हैं। उनके समर्थकों का दावा है कि जमीनी स्तर पर निरंतर कार्य और आम जनता से जुड़ाव के कारण उन्होंने क्षेत्र में व्यापक समर्थन हासिल किया है। जानकारी के मुताबिक, उन्होंने भारतीय जनता पार्टी से उत्तर करीमगंज सीट के लिए टिकट की मांग की है। हालांकि अभी तक किसी भी प्रमुख दल ने अपने उम्मीदवारों की आधिकारिक घोषणा नहीं की है। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि इस बार बेरोजगारी, बाढ़ नियंत्रण, आधारभूत संरचना और सीमावर्ती क्षेत्रों के विकास जैसे स्थानीय मुद्दे चुनाव में निर्णायक भूमिका निभा सकते हैं। ऐसे में राजनीतिक दल क्षेत्र में सक्रिय चेहरों को प्राथमिकता दे सकते हैं।

कुछ स्थानीय लोगों का यह भी कहना है कि यदि उन्हें पार्टी से टिकट नहीं मिलता, तो वे निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में भी चुनाव मैदान में उतर सकती हैं, हालांकि इस संबंध में उनकी ओर से कोई आधिकारिक बयान सामने नहीं आया है। बराक घाटी में भी महिला दावेदारों को लेकर चर्चा जारी है। बड़खला, काटिगढ़ा, हाइलाकांडी, पाथारकांडी और उत्तर करीमगंज समेत विभिन्न क्षेत्रों से महिला उम्मीदवारों के नाम सामने आ रहे हैं। इससे संकेत मिलता है कि इस बार महिला प्रतिनिधित्व एक महत्वपूर्ण राजनीतिक मुद्दा बन सकता है।

स्थानीय स्तर पर यह धारणा व्यक्त की जा रही है कि अब तक उत्तर करीमगंज से किसी महिला को प्रतिनिधित्व का अवसर नहीं मिला है। ऐसे में यदि किसी महिला उम्मीदवार को टिकट दिया जाता है, तो इसे एक महत्वपूर्ण राजनीतिक संदेश के रूप में देखा जा सकता है। क्षेत्र की मूलभूत समस्याएं–खराब सड़कें, जल निकासी की दिक्कतें और बेरोजगारी–अब भी प्रमुख मुद्दे बने हुए हैं। मतदाताओं का एक वर्ग मानता है कि इन समस्याओं को समझने और उठाने वाले जमीनी कार्यकर्ता को इस बार अवसर मिलना चाहिए। मुन्नी छेत्री का नाम इसी संदर्भ में चर्चा में है। सोशल मीडिया और सार्वजनिक मंचों पर उनके समर्थन में आवाजें उठ रही हैं, वहीं कुछ स्थानीय महिलाओं ने भी प्लेकार्ड के माध्यम से महिला प्रतिनिधि की मांग रखी है। अब सबकी निगाहें आगामी टिकट वितरण और उम्मीदवारों की आधिकारिक घोषणा पर टिकी हैं। यह देखना दिलचस्प होगा कि क्या इस बार उत्तर करीमगंज को स्वतंत्रता के बाद पहली बार जमीनी स्तर से उभरी किसी महिला को प्रतिनिधित्व का अवसर मिलता है या नहीं देखने वाली बात है।

फेसबुक पोस्ट के लिए जिले के हरिनटिला गांव के युवक ने माफी मांगी

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

श्रीभूमि: श्रीभूमि जिले के रामकृष्णनगर विधानसभा क्षेत्र के दुल्लभछड़ा के समीप हरिनटिला गांव में एक पारिवारिक विवाद को लेकर सोशल मीडिया फेसबुक पर प्रकाशित एक पोस्ट के संबंध में स्थानीय युवक राजू सिन्हा और विनय कुमार सिन्हा ने माफी मांगी है। प्राप्त जानकारी के अनुसार, हरिनटिला गांव निवासी रंजीत सिन्हा के दो पुत्र–राजू सिन्हा और विनय कुमार सिन्हा–उसी घर के पास ईश्वर बाबू सिन्हा के साथ घर के एक हिस्से के मालिकाना हक को लेकर लंबे समय से मामला अदालत में विचाराधीन है। कुछ दिन पहले जमीन के एक हिस्से को लेकर दोनों पक्षों के बीच मतभेद और तनाव की स्थिति उत्पन्न हो गई थी।

आरोप है कि उसी दौरान विनय कुमार सिन्हा से विवादित पक्ष के घर के पास आपत्तिजनक व्यवहार हो गया। बाद में उस घटना का वीडियो किसी अज्ञात व्यक्ति द्वारा फेसबुक पर अपलोड कर दिया गया, जो स्थानीय स्तर पर चर्चा का विषय बन गया। घटना को लेकर परिवार की ओर से गहरा दुःख व्यक्त किया गया है। राजू सिन्हा ने कहा कि उनके भाई का व्यवहार अनजाने में हुआ तथा वह अनुचित था। इसके लिए उन्होंने समाज के विभिन्न समुदायों के लोगों से ईमानदारीपूर्वक माफी मांगी है। उन्होंने यह भी बताया कि जमीन से संबंधित मामला वर्तमान में अदालत में लंबित है। अदालत के निर्णय तक ईश्वर बाबू सिन्हा के आवासीय हिस्से को अलग करने के संबंध में उनकी ओर से सद्भावना बनाए रखी जाएगी। इस मामले में समाज के प्रतिष्ठित व्यक्तियों और स्थानीय लोगों से सहयोग की भी अपील की गई है। घटना के बाद क्षेत्र में हलचल देखी गई, हालांकि स्थानीय निवासी दोनों पक्षों से शांतिपूर्ण समाधान की अपेक्षा कर रहे हैं।

इंद्रलोक इंडस्ट्रियल एरिया में प्लास्टिक फैक्ट्री में लगी आग, 3 वॉटर टैंकर और 2 वॉटर बाउजर ने पाया काबू

नई दिल्ली। उत्तर-पश्चिमी दिल्ली के इंद्रलोक इंडस्ट्रियल एरिया स्थित एक प्लास्टिक फैक्ट्री में रविवार दोपहर भीषण आग लग गई। आग की सूचना मिलते ही दमकल विभाग की कई गाड़ियां मौके पर पहुंचीं और कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया गया। दमकल विभाग के अनुसार, आग लगने की सूचना 16 फरवरी को सुबह करीब 11:37 बजे मिली। सूचना मिलते ही दमकल की तीन वॉटर टैंकर और दो वॉटर बाउजर मौके के लिए रवाना किए गए। आग की गंभीरता को देखते हुए 12:04 बजे अतिरिक्त दमकल वाहन और अधिकारी भी मौके पर भेजे गए। स्थिति को देखते हुए तीन वॉटर टैंकर, चार वॉटर बाउजर और एक मल्टीपर्पज वाहन (MP) को आग बुझाने के लिए लगाया गया। दमकल अधिकारी एसटीओ विजय दहिया और एडीओ राजीव सिन्हा के नेतृत्व में टीम ने आग बुझाने का अभियान चलाया। आग लगने का स्थान इंद्रलोक इंडस्ट्रियल एरिया की रिलैक्सो वाली गली में स्थित प्लास्टिक फैक्ट्री बताया गया है। फिलहाल आग लगने के कारणों का पता नहीं चल सका है। दमकल विभाग की टीम ने समय रहते आग पर नियंत्रण पा लिया, जिससे आसपास की अन्य फैक्ट्रियों में आग फैलने से रोका जा सका।

शिव विवाह के पावन अवसर पर,मानव सेवा संगठन के तत्वावधान में 15 जोड़े का सामूहिक विवाह हुआ संपन्न

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता
बादल हुसैन

नई दिल्ली, खुशनुमा मौसम और उत्सवी माहौल में दुधिया रोशनी में नहाऐ , देवनगर के श्री गुरु रविदास विश्राम धाम मंदिर में पुष्प वर्षा के बीच एक सामूहिक विवाह संपन्न हुई।करोल बाग की मानव सेवा संगठन के तत्वावधान में 15 जोड़े वैदिक मंत्रोच्चार एवं पारंपरिक रीति रिवाजों के साथ परिणय सूत्र में बंधे। इस ऐतिहासिक आयोजन के साक्षी बने सैकडों लोगों ने वर वधू को सुखत जीवन की मंगल कामना की। और इस भव्य कार्यक्रम की सराहना की। सामूहिक विवाह समारोह में दुल्हा दुल्हन ने एक दूसरे को वरमाला पहनाकर सात फेरे लिए और एक नए जीवन की शुरुआत की।मानव सेवा संगठन का उद्देश्य दहेज प्रथा को समाप्त करना और आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों को सहयोग प्रदान करना रहा। मानव सेवा संगठन के संयोजक और सामूहिक विवाह समारोह के आयोजक कर्ता मुख्य अतिथि क्षेत्रीय विधायक विषेश रवि ने कहा की सामूहिक विवाह जैसे आयोजन समाज में समानता सहयोग और समाजिक कुरीतियों के उन्मूलन का सशक्त माध्यम है। उन्होंने आगे भी ऐसे आयोजनों को निरंतर जारी रखने का संकल्प व्यक्त किया। मानव सेवा संगठन के अनेक पदाधिकारी व गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर दिखा भक्तों में भारी उत्साह

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

बुढार महाशिवरात्रि पर्व के अवसर पर वार्ड नं 4 हरे माधव कॉलोनी मां गायत्री दुर्गा उत्सव समिति के सदस्यों के द्वारा शंकर मंदिर में सुबह से जल दूध दही से भोलेनाथ को स्नान कराकर महाकाल बाबा को बेल पत्र धतूरा भांग बेर आम का करहा गैहू की बाली फल फूल चंदन लगाकर बड़े ही श्रद्धा भक्ति से पुजा अर्चना कर त्रिनेत्र धारी से जीवन को सफल बनाने की हाथ जोड़कर प्रार्थना की महशिवरात्रि के दिन सभी सदस्यों के और से भाग खिचड़ा प्रसाद ग्रहण किया यह भंडारे का कार्यक्रम दोपहर 4:00 बजे से रात्रि 8:00 बजे तक भांग और खीचड़ा प्रसाद बड़े प्रेम श्री श्रद्धालु एवं भक्तजनों ने ग्रहण किया सभी सदस्यों जैकी पंजवानी गुलशन मखीजा पंकज विशनानी पिंटू योगेश तलरेजा सहिल आसवानी फिकी ओर इसके अलावा बुढी मंदिर पुरानी बस्ती सिन्धी बाजार बाबा कंपलेक्स बुढार ब्लॉक ऑफिस टिकरी टोला और ऐसे अनेक शंकर मंदिरों में भगवान भोलेनाथ के जयकारों से पुरा नगर ग्रामीणों में भी उत्साह के साथ भोलेनाथ के भंडारे का प्रसाद श्रद्धालुओं ने बड़े ही ध्यान लगाकर प्रसाद ग्रहण किया।

बोरवेल में गिरे 3 वर्षीय बालक को पुलिस द्वारा सकुशल निकल गया बाहर

दिनांक 16.02.2026 को थाना सुरियावां क्षेत्र अंतर्गत ग्राम अमिलहरा में एक तीन वर्षीय बालक बोरवेल में गिरने की डायल-112 की सूचना पर पीआरवी-5074 व स्थानीय पुलिस द्वारा त्वरित कार्यवाही करते हुए स्थानीय लोगों की मदद से बालक को सकुशल बाहर निकाल लिया गया है।

सुसज्जित रोशनी के बीच श्रीभूमि जिले के दुल्लभछड़ा में राहुल मेले का शुभ उद्घाटन

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

श्रीभूमि गत 15 फरवरी को जिले के दुल्लभछड़ा के एचएस रोड पर रंग-बिरंगी रोशनी के बीच राहुल मेले का भव्य शुभारंभ किया गया। फीता काटकर मेले का उद्घाटन दरग़ारबंद जीपी की सभानेत्री माला सिन्हा ने किया। इस अवसर पर दुल्लभछड़ा भाजपा मंडल अध्यक्ष चंदन भर, लालछड़ा जीपी अध्यक्ष संजय गोस्वामी, भेटारबंद जीपी अध्यक्ष बिमल नाथ सहित कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

कार्यक्रम में समाजसेवी दीपन सिन्हा, मनोरंजन सिन्हा, दरग़ारबंद जीपी के सह-सभापति श्यामकुमार सिन्हा, मृणाल सिन्हा तथा मेला समिति के अन्य सदस्य भी मौजूद थे।

मेले में दर्शकों के लिए 'मथ का कुआँ', झूला, ब्रेक डांस, मिकी माउस, जंपिंग सहित अनेक बच्चे के लिए रोमांचक और मनोरंजक राइड्स की व्यवस्था की गई है। इसके अलावा विभिन्न प्रकार की दुकानों से मेला परिसर सजा हुआ है। मेला समिति की ओर से दुकानदारों को अपने-अपने स्टॉल के सामने स्वच्छता बनाए रखने के निर्देश दिए गए हैं। साथ ही, चल रही माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक परीक्षाओं को ध्यान में रखते हुए ध्वनि नियंत्रण रखने का निर्णय लिया गया है। मेले का समय प्रतिदिन शाम 3 बजे से रात 9 बजे तक निर्धारित किया गया है। समिति के अध्यक्ष गौतम चाटार्जी सहित अन्य विशिष्ट व्यक्तियों ने मेले में आने वाले दर्शकों से शांति एवं अनुशासन बनाए रखने और किसी भी प्रकार की असुविधा से बचने के लिए सहयोग करने की अपील की।

विदेश में नौकरी का झांसा देकर युवकों को साइबर स्लेवरी में धकेलने वाले गिरोह का भंडाफोड़, दो गिरफ्तार

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

बलरामपुर, 16 फरवरी 2026। विदेश में अच्छी नौकरी का लालच देकर युवकों को साइबर ठगी गिरोह के हाथों बेचने वाले एक अंतर्राज्यीय संगठित नेटवर्क का पुलिस ने पर्दाफाश करते हुए दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। यह गिरोह युवकों को थाईलैंड में नौकरी दिलाने का झांसा देकर अवैध रूप से लाओस ले जाता था, जहां उन्हें बंधक बनाकर साइबर फ्रॉड कराया जाता था। पुलिस अधीक्षक विकास कुमार के निर्देश पर साइबर ठगी और साइबर स्लेवरी से जुड़े मामलों के विरुद्ध चलाए जा रहे अभियान के तहत यह कार्रवाई की गई। अपर पुलिस अधीक्षक एवं साइबर क्राइम नोडल अधिकारी विशाल पाण्डेय के पर्यवेक्षण में थाना तुलसीपुर पुलिस व साइबर टीम ने ऑपरेशन को अंजाम दिया।

पुलिस के अनुसार गिरफ्तार अभियुक्तों में फैजान रजा निवासी संत कबीर नगर तथा राम प्रवेश सिंह निवासी जौनपुर शामिल हैं। फैजान को हरैय्या तिराहा के पास से गिरफ्तार किया गया, जबकि राम प्रवेश सिंह को पूर्व में मुंबई से पकड़ा गया था। दोनों को न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत किया गया।

यूट्यूब के जरिए फंसाते थे शिकार

जांच में सामने आया कि आरोपी सोशल मीडिया, विशेषकर यूट्यूब चैनल के माध्यम से थाईलैण्ड (बैंकॉक) में डाटा एंट्री ऑपरेटर की नौकरी का झूठा विज्ञापन जारी करते थे। वे युवकों को 60 हजार रुपये वेतन का लालच देकर उनसे धनराशि और दस्तावेज लेते थे तथा मुंबई से उनका टिकट बनवाकर विदेश भेजते थे। इसके बाद पीड़ितों को गोल्डन ट्रायंगल मार्ग से अवैध रूप से लाओस पहुंचाया जाता था, जहां स्कैम कम्पाउंड में प्रति व्यक्ति लगभग ढाई लाख रुपये में बेच दिया जाता था। वहां उनसे जबरन ऑनलाइन निवेश, फर्जी चैटिंग और अन्य माध्यमों से साइबर ठगी कराई जाती थी।

गिरोह का बंटा हुआ था पूरा नेटवर्क

पुलिस के मुताबिक राम प्रवेश सिंह लाओस में रिसीविंग और समन्वय का काम करता था, जबकि फैजान भर्ती, इंटरव्यू और भेजने की व्यवस्था संभालता था। अन्य सहयोगियों के साथ मिलकर यह गिरोह कमीशन बांटता था और कुछ भुगतान क्रिप्टो करेंसी के माध्यम से लिया जाता था। आरोपियों ने बिना वैध पंजीकरण विदेश भेजने और धोखाधड़ी से आर्थिक लाभ अर्जित करने की बात स्वीकार की है।

बरामदगी व धाराएं

पुलिस ने आरोपियों के पास से दो एंड्रॉयड मोबाइल फोन बरामद किए हैं। उनके विरुद्ध भारतीय न्याय संहिता, आईटी एक्ट तथा उत्प्रवास अधिनियम की विभिन्न धाराओं में मामला दर्ज किया गया है। कार्रवाई में थाना तुलसीपुर, साइबर थाना, साइबर सेल और सर्विलांस टीम के पुलिसकर्मियों की संयुक्त भूमिका रही। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि इस नेटवर्क से जुड़े अन्य लोगों की तलाश जारी है और ऐसे गिरोहों के विरुद्ध अभियान आगे भी जारी रहेगा।

बलरामपुर से सनसनीखेज वारदात

● कस्टमर बनकर आया चोर, मोबाइल लेकर फरार- आरोपी का नंबर अभी भी चालू

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

बलरामपुर जनपद बलरामपुर के महाराजगंज थाना क्षेत्र अंतर्गत ग्राम पंचायत बनकटवा चौराहा में दिनदहाड़े हुई मोबाइल चोरी की घटना से इलाके में हड़कंप मच गया है। प्राप्त जानकारी के अनुसार, कनहरा निवासी स्वामी दयाल वर्मा की दुकान बनकटवा चौराहा और लैबुड्डी के बीच नहर के पास स्थित है। इसी क्षेत्र में बगल की कपड़े की दुकान पर एक अज्ञात युवक ग्राहक बनकर पहुंचा। युवक ने पहले भरोसा जीतने के लिए चार साड़ियां पसंद कीं और उन्हें पैक करवाया।

सामान पैक होने के बाद उसने गूगल पे के माध्यम से भुगतान करने की बात कही और 'पेमेंट कन्फर्म करने' के बहाने स्वामी दयाल वर्मा से उनका मोबाइल फोन मांग लिया। इसी दौरान दुकानदार अन्य ग्राहकों को सामान देने में व्यस्त हो गए। मौका पाते ही आरोपी मोबाइल पर बात करने का नाटक करते हुए धीरे-धीरे दुकान से बाहर निकला और देखते ही देखते फरार हो गया। जब तक दुकानदार को शक हुआ, तब तक आरोपी काफी दूर निकल चुका था।

ताज़ा अपडेट: बताया जा रहा है कि आरोपी द्वारा इस्तेमाल किया जा रहा मोबाइल नंबर अभी भी चालू है, लेकिन कॉल रिसीव नहीं की जा रही है।

घटना की सूचना तत्काल महाराजगंज थाना को दी गई, जहां लिखित शिकायत दर्ज कर ली गई है। पुलिस नंबर के आधार पर आरोपी की पहचान और लोकेशन ट्रेस करने का प्रयास कर रही है। इस घटना के बाद क्षेत्र के व्यापारियों में दहशत का माहौल है। स्थानीय लोगों का कहना है कि इस तरह की घटनाओं से बचने के लिए दुकानदारों को सतर्क रहने की आवश्यकता है।

व्यापारियों से अपील: डिजिटल पेमेंट या किसी अन्य बहाने से अनजान व्यक्ति को अपना मोबाइल फोन न दें। भुगतान स्वयं अपने हाथ से ही करें।

महाराजा अग्रसेन मार्ग पर मधुबन अंडरपास की एक लेन बंद, जाम और हादसे का खतरा बढ़ा

पूर्वी दिल्ली। महाराजा अग्र मार्ग पर मधुबन अंडरपास का एक लेन कई दिनों से बंद है। जिसके कारण सड़क की एक लेन पर ही आवाजाही हो रही है। जिसके कारण आए दिन राहगीर और स्थानीय लोगों को भारी पेशानी झेलनी पड़ रही है। राहगीरों ने आरोप लगाया की तीन माह से पूरे सड़क की एक लेन बंद पड़ी है। हर दिन सड़क पर जाम और दुर्घटना की समस्या उत्पन्न हो रही है। आरओबी के नीचे खोदे गए गड्ढे की सही से बैरिकेडिंग नहीं होने कारण कभी हादसा हो सकता है। **ROB निर्माण के लिए बंद हुआ था बंद** स्थानीय लोगों ने बताया कि विकास मार्ग को गणेश से जोड़ने वाली यह मुख्य सड़क है। लगभग तीन माह पहले आरओबी के नीचे निर्माण कार्य के लिए सड़क को बंद किया गया था।प्रदुषण कंट्रोल के लिए शहर में ग्रैप नियम लगाए जाने के बाद से निर्माण कार्य भी बंद है और सड़क भी। सड़क की एक लेन पर से दोनों तरफ से वाहनों की आवाजाही हो रही है। जिसके कारण शाम के समय सड़क पर जाम और दुर्घटना की समस्या की उत्पन्न हो रही है। वहीं आरओबी के पास सड़क पर खोदे गए गड्ढे पानी से भर गए हैं। पास में स्कूल और कालेज होने के कारण बच्चे रोजाना इधर से गुजरते हैं। सही से बैरिकेडिंग न होने के कारण हादसा होने की संभावना बनी रहती है।

जिलाधिकारी शैलेष कुमार ने प्रशिक्षुओं को वितरित किए तीर-धनुष किट, राष्ट्रीय खिलाड़ी आकाश गुप्ता के मार्गदर्शन में निखरेंगी प्रतिभाएं

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

भदोही, दिनांक:- जनपद में खेल प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने की दिशा में आज एक प्रेरणादायक कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें जिलाधिकारी शैलेष कुमार द्वारा राष्ट्रीय तीरंदाजी खिलाड़ी/कोच आकाश गुप्ता से प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे प्रशिक्षुओं को तीर-धनुष एवं तीरंदाजी किट का वितरण किया गया। किट जेपी हॉस्पिटल के प्रबंध निदेशक डॉ. रत्नेश पाण्डेय तथा सिस्को के प्रबंध निदेशक आशुतोष तिवारी के सौजन्य से उपलब्ध कराई गई। कार्यक्रम के दौरान छोटे-छोटे बच्चों में विशेष उत्साह एवं प्रसन्नता देखने को मिली। किट प्राप्त करते ही बच्चों के चेहरों पर मुस्कान झलक उठी और उन्होंने अपने कोच के साथ अभ्यास करने की इच्छा व्यक्त की। जिलाधिकारी शैलेष कुमार ने कृष्णा मिश्रा, मानस उपाध्याय, तेजस उपाध्याय, अंश उपाध्याय, परी उपाध्याय, आयुषी जायसवाल, अंश जायसवाल, अकक्षिता जायसवाल को तीर धनुष किट वितरण किया। जिलाधिकारी ने अपने संबोधन में कहा कि तीरंदाजी जैसे खेल एकाग्रता, संतुलन और अनुशासन का उत्कृष्ट उदाहरण हैं। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी आकाश गुप्ता के मार्गदर्शन में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे ये बच्चे भविष्य में जनपद, प्रदेश एवं देश का नाम रोशन करेंगे।

उन्होंने समाज के जिम्मेदार नागरिकों एवं संस्थानों द्वारा खेल प्रतिभाओं को सहयोग प्रदान करने की सराहना करते हुए कहा कि इस प्रकार की पहल से ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के बच्चों को समान अवसर मिलते हैं। राष्ट्रीय खिलाड़ी/कोच आकाश गुप्ता ने कहा कि संसाधनों की उपलब्धता से खिलाड़ियों का मनोबल बढ़ता है और वे बेहतर प्रदर्शन कर पाते हैं। उन्होंने आश्वासन दिया कि सभी प्रशिक्षुओं को तकनीकी रूप से सशक्त प्रशिक्षण दिया जाएगा। उपस्थित अभिभावकों ने भी इस पहल के लिए जिलाधिकारी एवं सहयोगकर्ताओं के प्रति आभार व्यक्त किया।

भाजपा एमआईएम को रोकने को सपा अल्पसंख्यक सभा लगाएगी जागरूकता चौपाल

● एसआईआर में पूरी मुस्तैदी से फार्म 6 भरवा रहे एवं फार्म 7 पर काम कर रहे अल्पसंख्यक सभा के पदाधिकारी - अरमान ख़ान

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

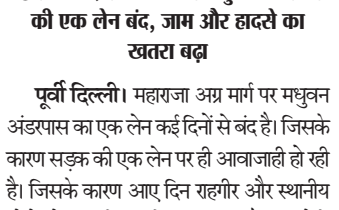

कानपुर। समाजवादी पार्टी अल्पसंख्यक सभा कानपुर महानगर की मासिक बैठक रविवार को ग्वालटोली में संपन्न हुई बैठक की अध्यक्षता महानगर अध्यक्ष अरमान खान द्वारा की गई। बैठक में महानगर अध्यक्ष अरमान खान ने बताया कि अभी तक समाजवादी पार्टी कानपुर महानगर एवं अल्पसंख्यक सभा ने एस आई आर को लेकर पार्टी द्वारा निर्देशित सभी कार्य किए हैं एवं अभी भी एसआईआर में फॉर्म 6 भरवाने का कार्य किया जा रहा है तथा फार्म 7 पर भी ध्यान दिया जा रहा है और इस समय में भाजपा को फायदा पहुंचाने के मकसद से उत्तर प्रदेश में दाखिल हुई पार्टी एमआईएम को रोकने के लिए अल्पसंख्यक सभा मुस्लिम बाहुल्य क्षेत्रों में जाकर जागरूकता फैलाएगी अरमान खान ने कहा कि एमआईएम के नेता जज्बाती एवं कम्युनल बयान देकर समाज में दरार पैदा करने का कार्य करते हैं जो कि सीधा-सीधा भारतीय जनता पार्टी की तर्ज पर काम है हमें इनसे सतर्क रहने का कार्य करना है एवं अखिलेश यादव को 2027 में उत्तर प्रदेश का मुख्यमंत्री बनाना है कार्यक्रम में प्रमुख रूप से अरमान खान महानगर अध्यक्ष, हाजी सलमान हाशमी महासचिव, इम्तियाज मदनी उपाध्यक्ष, रफ़ीक़ अंसारी उपाध्यक्ष, नियाज़ उस्मानी कोषाध्यक्ष, नसीम रज़ा, आक़िल गुड्डू महानगर सचिव, मोहसिन सिद्दीकी महानगर सचिव, मोहम्मद वारिस महानगर सचिव, महताब अहमद महानगर सचिव, हाजी सलीम अंसारी आदि उपस्थित रहे।